★ वर्ष 43 ★ अंक 9 ★ सितम्बर 2016

₹15/-

हँसती दुनिया

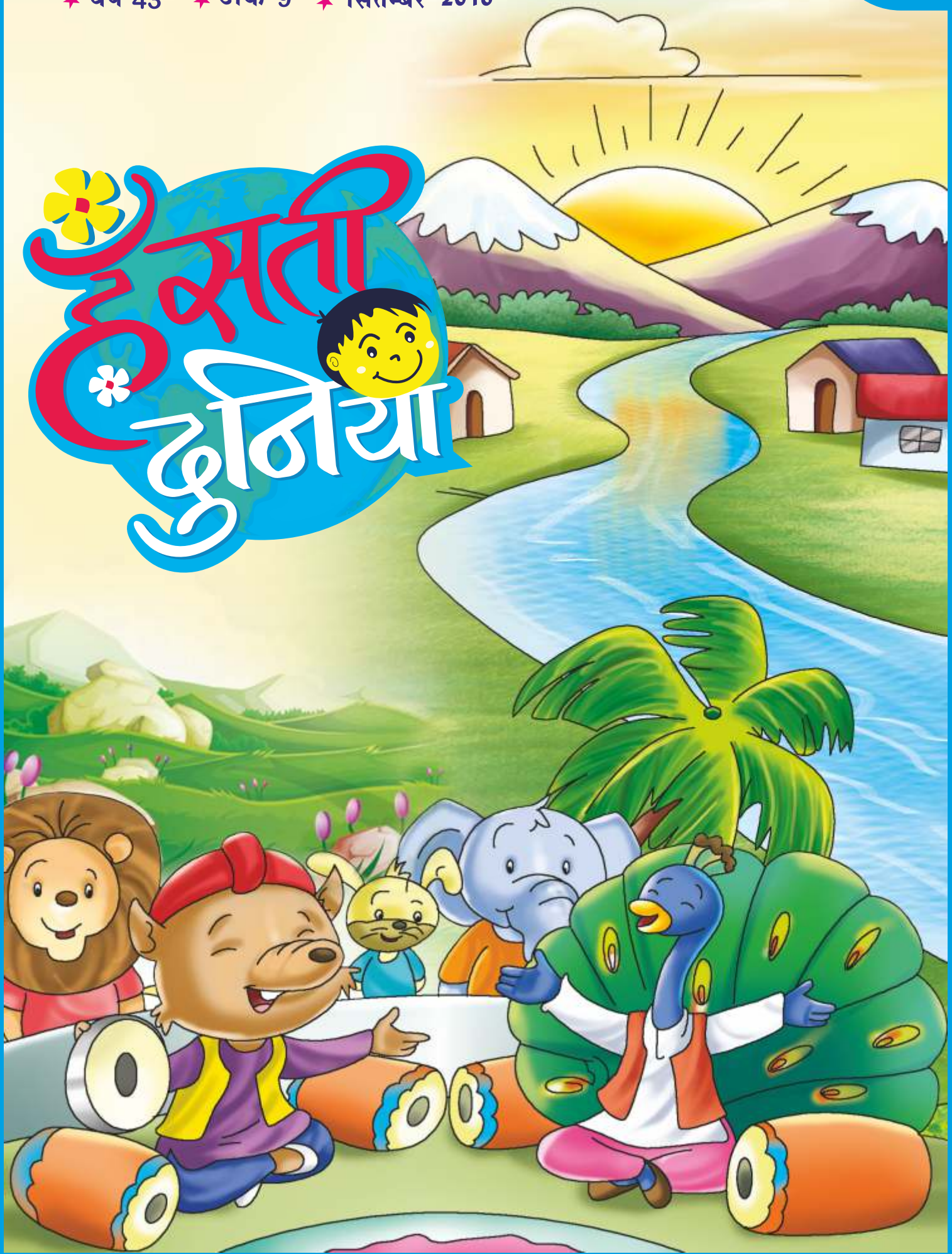

हँसती दुनिया

● वर्ष 43 ● अंक 9 ● सितम्बर 2016 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

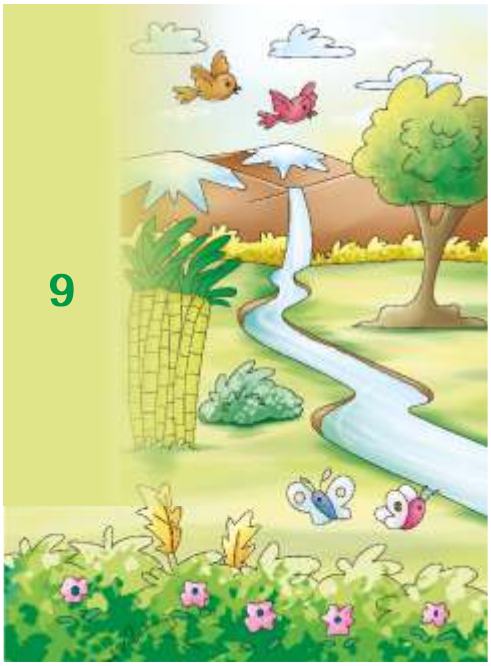

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
11. समाचार
20. वर्ग पहेली
29. पहेलियां
41. जन्मदिन मुबारक
42. क्या आप जानते हैं?
44. पढ़ो और हँसो
46. रंग भरो परिणाम
48. कभी न भूलो
49. आपके पत्र मिले
50. चित्र पहेली

चित्रकथाएं

12 दादा जी
34 किट्टी

कविताएं

9. धरती देती सब कुछ
: हरजीत निषाद

17. बेटी
: डॉ. परशुराम शुक्ल

27. आओ परियों, फल
: रेनू भटनागर

40. झाड़ू का उपहार, मालिक और नौकर
: राधेलाल 'नवचक्र'

43. गाँव
: डॉ. दिनेश चमोला

कहानियां

7. रघु का दान
: डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी

10. गाँव को डूबने से...
: किशोर डैनियल

16. मूर्ख कौन है?
: गोपाल जी गुप्त

21. संगठन में शक्ति है
: किशन लाल शर्मा

26. बेलापुर के वैद्यजी...
: ईलू रानी

30. लालच
: कीर्ति श्रीवास्तव

39. कृतज्ञता
: श्यामसुन्दर गर्ग

विशेष / लेख

18. हेलीकॉप्टर की कहानी
: दिनेश दर्पण

19. यह भी जानिए ...

22. क्या आपको पता है?
: विभा वर्मा

23. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

24. दुनिया बदल देने वाला आविष्कार
: दीपांशु जैन

28. अच्छे चरित्र का निर्माण करें
: महेन्द्र सिंह शेखावत

33. पेड़ों पर चढ़ने वाली मछली
: विद्या प्रकाश

38. मच्छर की कहानी...
: गोपाल जी गुप्त

सबसे पहले

शिक्षक दिवस

दो मित्र हैं। दोनों एक दूसरे की बात को ध्यान से सुनते हैं। दोनों आपस में इतने घुलमिल कर रहते हैं कि लगभग हर कार्य को साथ–साथ ही मिलकर करते हैं। पढ़ाई हो, सिनेमा देखना हो तथा स्कूल में खेलकूद हो इत्यादि। सभी को इस बात का आभास है कि एक मित्र ने अगर किसी काम के लिए न कह दी तो दूसरा भी न ही कह देगा और अगर एक ने कार्य करने की हाँ कह दी दो दूसरा भी उसका सहयोग देगा। यह बात इसलिए सम्भव हो पाई है क्योंकि दोनों एक–दूसरे की सुनते हैं।

हर वर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। इस दिन शिक्षकों का सम्मान किया जाता है। उनको प्रशस्ति–पत्र दिए जाते हैं और उनकी सराहना की जाती है। यहाँ विचारणीय बात यह है कि शिक्षक को सम्मान देना, उनको भेंट स्वरूप कुछ देना। इससे शिक्षक को सन्तुष्टि अवश्य मिलती है कि उसके विद्यार्थी उसका सम्मान करते हैं। केवल सम्मान करने से विद्यार्थी शिक्षित नहीं हो जाता।

बच्चे की शिक्षा तो जन्म के साथ ही आरम्भ हो जाती है, माता–पिता बच्चे के प्रथम शिक्षक होते हैं। जब अभी वह बोलना भी नहीं जानता, माता–पिता उसकी हर आवश्यकता की पूर्ति करते हैं और साथ चलना, बोलना, व्यवहार करना भी सिखाते हैं। बहन–भाई, रिश्तेदार, पड़ोसी और मित्र भी उसके काफी सहायक होते हैं। जिस किसी ने कुछ भी सिखाया होता है वह उस समय उसका शिक्षक ही होता है।

जब बच्चा स्कूल जाता है तो उसको बताया जाता है कि यह तुम्हारा शिक्षक है। इसकी हर बात को ध्यान से सुनना और आज्ञा का पालन करना है। फिर भी आज ध्यान अधिकतर उधर चला जाता है, जो चीजें हमें नहीं करनी हैं वह हम करते चले जाते हैं और जो करने योग्य हैं उन्हें हम टालते चले जाते हैं। हमारी मित्रता आज दूसरों की आलोचना, उनका उपहास करना, कार्य में रोड़े अटकाना, दूसरों को आगे बढ़ता देख ईर्ष्या करने वालो से होती जा रही है। इन कार्यों में हम एक दूसरे के सहयोगी भी हो जाते हैं और ऐसा करने में गौरव महसूस करते हैं।

इन सभी बातों पर गौर करें तो यही समझ में आता है कि हमने माता–पिता, गुरु अथवा शिक्षक का सम्मान तो किया परन्तु उनकी बात को ध्यान से नहीं सुना। जब ध्यान से सुना ही नहीं तो उसको आचरण में भी नहीं ले पाएं।

आज आवश्यकता है ध्यान से सुनने की, ज्ञान की कोई कमी नहीं है। आज हम सभी संचार की दुनिया में इतने आगे बढ़ चुके हैं कि हर तरह के ज्ञान की परख हम स्वयं कर सकते हैं। हर वह कार्य करने योग्य है जिसमें मानवता का कल्याण निहित है। वह हर दिन शिक्षक दिवस है जब हम अपने गुरुजनों की बात को ध्यान से सुनकर, समझकर अपनी बुद्धि के द्वारा आचरण में लाते हैं तो शिक्षा हमारी मित्र बन जाती है और फिर हम स्वयं के भी मित्र बन जाते हैं।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 138

सन्तां कोलों बेमुख बन्दा सुख चैन नहीं पा सकदा।
साध संगत दी किरपा बाझों खुद नूं नहीं बदला सकदा।
साध दी संगत सुक्के जीवन विच करदी हरयाली ए।
भुख नंग दा नास करेंदी आ जांदी खुशहाली ए।
खाणा पीणा सौणा हुन्दा जीवन दा आधार नहीं।
धृगाकार जे सभ कुझ हुन्दे चेते एह निरंकार नहीं।
कुल दुनियां दा राजा होवे पर जे चेते नाम नहीं।
बिन मालिक दे घोड़ा है ओह जिस नूं कोई लगाम नहीं।
इक्को इक ए खेड है इक दी लम्बा चौड़ा लेखा नहीं।
कहे अवतार गुरु ही रब ए इस विच कोई भुलेखा नहीं।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि विमुख व्यक्ति (जिसका मुख सन्तों के मुख की उल्टी दिशा में हो।) कभी सुख–चैन प्राप्त नहीं कर सकता। वह साध संगत की कृपा के बिना अपने जीवन में कोई परिवर्तन नहीं ला सकता। साधु की संगत का इन्सान के जीवन में बहुत अधिक महत्व होता है। साधु की संगत इन्सान के जीवन में हरियाली लाती है। यह भूख और तंगहाली को समाप्त करके इन्सान के जीवन को खुशहाल बनाती है।

जीवन में यदि सुख–चैन, खुशहाली, हरियाली चाहिए तो सन्त का आशीर्वाद और साध संगत की कृपा प्राप्त करना आवश्यक है। संसार में अक्सर लोग भ्रमवश यह समझ लेते हैं कि अच्छा खाना–पीना और आरामदायक बिस्तर ही जीवन में सुख दे सकते हैं।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि अच्छा खाना–पीना, सोना ही जीवन का आधार नहीं है। यदि निरंकार–प्रभु की याद हृदय में नहीं बसी हुई है तो सब कुछ होते हुए भी जीवन को धृगाकार (निंदनीय) ही कहा गया है। सारी दुनिया पर राज्य करने वाले राजाधिराज को भी यदि परमात्मा के नाम की स्मृति नहीं है तो उसकी हालत बिना लगाम वाले उस घोड़े की तरह है जो अपने मालिक को कहाँ ले जाकर गिराएगा इसका कुछ पता नहीं।

बाबा अवतार सिंह जी इन प्रश्नों और स्थितियों का समाधान प्रस्तुत करते हुए कह रहे हैं कि यह तो एक प्रभु–परमात्मा का एक खेल मात्र है, इसका कोई लम्बा चौड़ा लेखा नहीं, बस इन्सान को सद्गुरु की कृपा से इतना समझ में आ जाना चाहिए, बिना किसी शक–सुबह के उसे पक्का भरोसा हो जाना चाहिए कि सद्गुरु ही परमात्मा है। इतनी समझ आ जाने मात्र से इन्सान का जीवन सार्थक हो उठता है, उसका संसार में आना सफल हो जाता है। अतः हर इन्सान को सद्गुरु की शरण में आकर अपने आप की पहचान अवश्य करनी चाहिए।

अनमोल वचन

– संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन'

★ जिनके कर्म ऊँचे हैं, वही ऊँचा है।

★ मानवता को अपनाना ही धर्म की पहचान है।

★ प्रभु ज्ञान की एक चिंगारी अज्ञानता तथा उसके साथ जुड़े पापों को पल में नष्ट कर देती है।

★ अभिमान से किया हुआ कर्म परमात्मा से कोसो दूर करता है।

★ इन्सानियत का दामन छोड़कर कामयाबियों का कोई महत्व नहीं है।

★ धर्म वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य, मनुष्य बनता है।

★ सद्गुरु की रहमत बिना परमात्मा से दूरी बनी रहती है।

★ वैज्ञानिक विकास के साथ दया भाव होना जरूरी।

★ केवल चलने में प्रगति नहीं होती, दिशा भी देखनी पड़ती है।

★ सर्वव्यापी की पहचान ब्रह्मज्ञानी सन्तों को साधन बनाने से होगी।

★ नफरतों के रिश्ते बहुत हो चुके, अब प्यार वाले रिश्ते बनाएं।

– बाबा हरदेव सिंह जी

★ ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों का जीवन व्याख्यानों पर नहीं कर्म पर आधारित होता है। – बाबा गुरबचन सिंह जी

★ प्रभु का दान मिलता रहेगा तो यह मन शान्त रहेगा।

★ आत्मा का न जन्म होता है न मृत्यु। एक तन को छोड़कर दूसरे को धारण करने का ही नाम है जन्म और मृत्यु।

★ सुख अध्यात्म में है सांसारिक पदार्थों में नहीं।

– निरंकारी राजमाता जी

★ गुस्सा इंजन है, अविवेक और अज्ञान उसके पहिये हैं।

– महात्मा गांधी

★ जीवन में एक दोस्त कर्ण जैसा भी जरूर होना चाहिए जो तुम्हारे गलत होते हुए भी तुम्हारे लिए युद्ध करे।

– स्वामी विवेकानन्द

★ प्रतिकूल परिस्थितियों में कुछ व्यक्ति टूट जाते हैं जबकि कुछ रिकॉर्ड तोड़ते हैं।

– विलियम ए. वाड

पौराणिक कथा : डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

रघु का दान

महाराज रघु अयोध्या के चक्रवर्ती राजा थे। उन्हीं के वंश में प्रभु राम ने जन्म लिया था। तभी वे रघुवंशी कहे जाते थे। एक बार रघु ने वृहत यज्ञ का निश्चय किया। सम्पूर्ण देश–विदेश से अनेक ऋषि, साधु–सन्त, मुनि–महात्मा, दुःखी, निर्बल लोग यज्ञ स्थल पर पधारे। राजा रघु ने सभी उपस्थित लोगों का स्वागत करके सुन्दर आभूषण, वस्त्र, स्वर्ण व पीतल पात्र दान कर दिए। अब उनके पास सामान्य वस्त्र रह गए। वे मात्र मिट्टी के पात्रों से अपना स्वयं का कार्य सम्पादित करने लगे।

एक दिवस सायंकाल वे अपने राजमहल के बरामदे में टहल रहे थे। उसी समय राजा रघु के पास ऋषि वरतन्तु के प्रिय शिष्य कौत्स नाम के ऋषि कुमार पधारे। महाराज रघु ने उनको प्रणाम किया और कठौते में सरयू जल लाकर उनके चरण धोये। उन्हें छाछ पिलाया, फिर प्रश्न किया, ''ऋषि कुमार! कहिए, आपका शुभागमन किस हेतु हुआ है? मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?''

ऋषि कुमार कौत्स ने कहा, ''राजन्! मेरा अध्ययन पूरा हो चुका है। गुरुदेव के आश्रम से घर जाने के पूर्व उन्हें दक्षिणा चुकानी है, गुरुदेव ने चौदह करोड़ सोने की मोहरें मांगी हैं। उन्होंने मुझे चौदह विद्याएं सिखाई हैं, प्रत्येक विद्या के लिए वे एक करोड़ मोहरें मांग रहे हैं। महाराज! यह कार्य आपकी कृपा से ही सम्भव है।''

महाराज रघु चिन्तामग्न हो गए। वे अपना सब कुछ दान कर चुके थे। अब कुछ भी अवशेष नहीं था। एक निजी रथ व अस्त्र–शस्त्र ही शेष बचे थे। कुछ देर सोचने के बाद वे बोले, ''ऋषि श्रेष्ठ! यहाँ आकर आपने बड़ी कृपा की है। बस थोड़ी कृपा और कर दें। मात्र तीन दिनों तक आप मेरे राजमहल में निवास कर इसे पवित्र करें। मैं मोहरों की व्यवस्था करके तीन दिनों में वापस आ जाऊँगा।'' कौत्स ने अयोध्या में रहना स्वीकार कर लिया।

महाराज रघु ने अपने मंत्रिश्रेष्ठ को तुरन्त बुलवाया।

उन्होंने मंत्री से कहा, ''यज्ञ में मेरे सभी सामन्तों ने सहयोग व कर चुका दिया है। परन्तु

अभी तक कुबेर नहीं आया। मेरे अस्त्र–शस्त्र रथ पर रख दो, मैं कल प्रातः तक वहाँ पहुँचकर कुबेर के ऊपर चढ़ाई करूँगा। आज रात्रि मेरा शयन नहीं होगा। जब तक ऋषि कुमार कौत्स की दक्षिणा राशि की समुचित व्यवस्था नहीं हो जाती तब तक मैं राजमहल वापस नहीं आऊँगा।

''महाराज! आप यह क्या कह रहे हैं। सब कुछ लुटा देने के बाद भी अब शरीर को कष्ट देने में क्या फायदा?'' मंत्री ने कहा।

महाराज रघु ने अत्यन्त आत्मविश्वास भरे भाव में कहा, ''यह कुछ नहीं। ऋषि कुमार का सम्मान करना ही हमारा धर्म है। फिर मैं कोई ऋण लेने नहीं जा रहा। मैं तो अपना कर लेने कुबेर के पास जा रहा हूँ। यह मेरी अपनी प्रतिज्ञा है।''

इधर कुबेर को महाराज रघु के आने की भनक लग गई। उन्होंने अपने बचाव के लिए तुरन्त अयोध्या चलना स्वीकार कर लिया। जब तक महाराज रघु अपने रथ पर बैठते, कुबेर राजमहल की छत पर आ गए। उन्होंने छत से ही आंगन की ओर मोहरें लुटानी शुरू कर दीं। थोड़ी ही देर में मोहरों का आंगन में एक बड़ा ढेर लग गया।

मंत्री दौड़ा–दौड़ा राजमहल के बाहर आया। वहाँ राजा रघु रथ पर बैठने ही जा रहे थे कि मंत्री ने उन्हें रोका, ''महाराज! कुबेर राजमहल की छत पर आ गए हैं और उन्होंने कई करोड़ मोहरें आंगन में फेंक दी हैं। कृपया अब आप उन पर चढ़ाई करने न जायें।''

महाराज रघु रथ से उतर आए। उन्होंने मन ही मन अपने पूर्वज श्री सूर्यदेव को धन्यवाद दिया।

अब राजा रघु ऋषि कुमार कौत्स के पास आए और कहा, ''विभु! आप आंगन में पड़ी मोहरें गुरु दक्षिणा देने हेतु ले जाएं।''

''मुझे तो मात्र चौदह करोड़ मोहरें ही चाहिए। उससे एक भी ज्यादा मोहर मुझे स्वीकार्य नहीं होगी।'' कौत्स ने उत्तर दिया।

''लेकिन यह धन आपके लिए ही आया है। इस धन को हम अपने राज्य में नहीं रख सकते। आपको यह धन स्वीकार करना ही होगा।'' रघु ने तुरन्त उत्तर दिया।

ऋषि कुमार कौत्स ने बड़ी दृढ़ता से कहा, ''रघु! मैं ऋषि पुत्र हूँ। मुझे इतने धन की क्या आवश्यकता? मैं एक भी मोहर ज्यादा नहीं ले सकता।'' और वे चौदह करोड़ स्वर्ण मोहरें लेकर अपने गुरुदेव के चरणों पर रख आए।

कविता : हरजीत निषाद

धरती देती सब कुछ

धरती का आंगन।
लगता मन भावन।
झरने झील नदियां।
यहाँ फूल कलियां।
गन्ना गुड़ शहद।
पीपल केला बरगद।
धरती है दयालु।
मिट्टी दोमट बालू।
देती हमें सम्बल।
सोना चांदी पीतल।
जल में है हलचल।
गंगा यमुना चम्बल।
सुन्दर संगमरमर।
एक से एक बढ़कर।
गाय भैंस ढोर।
कोयल चीता मोर।
बुलबुल का चहकना।
गौरेया का फुदकना।
धरती देती सब कुछ।
लेती नहीं कभी कुछ।

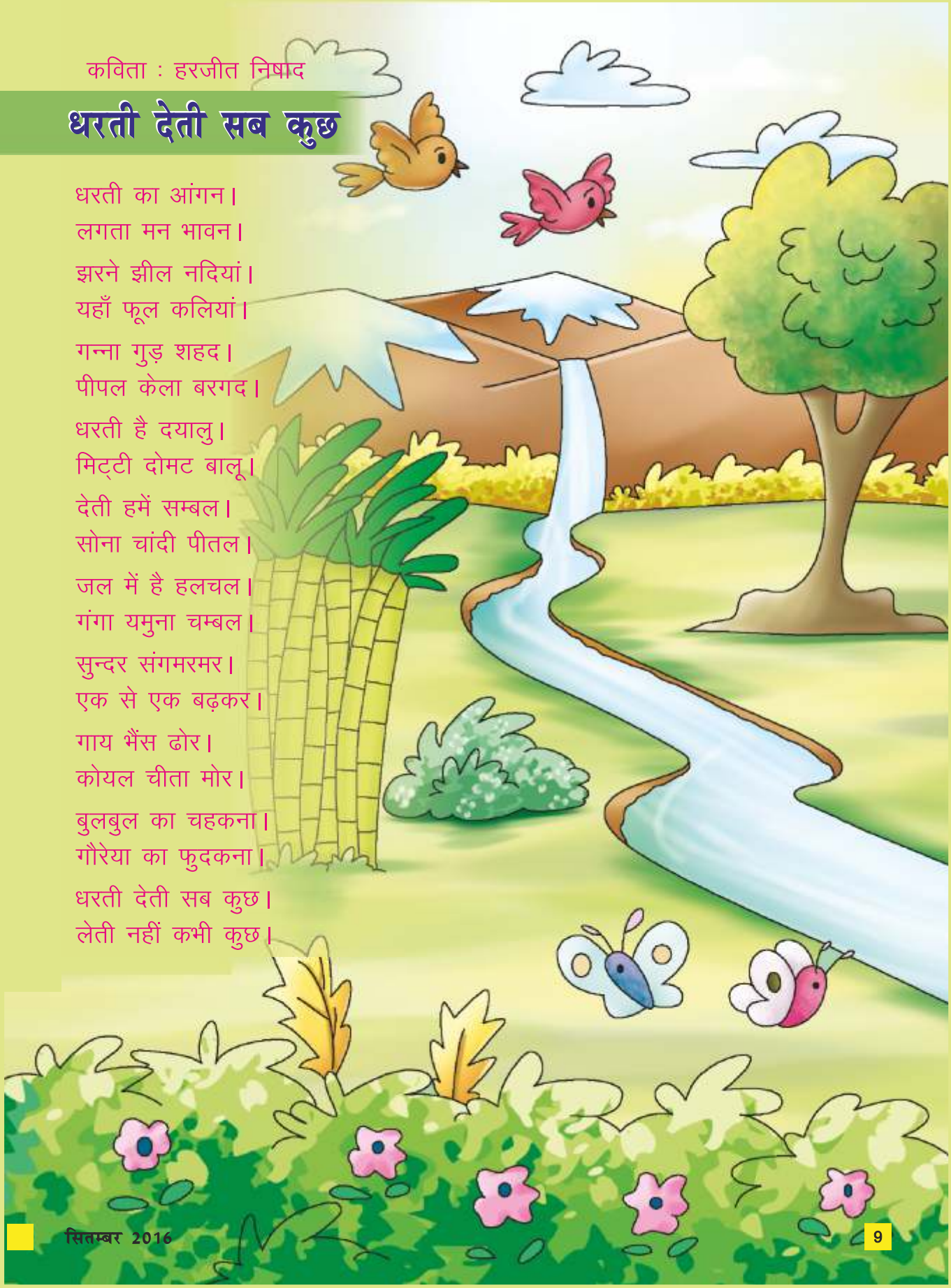

गाँव को डूबने से बचाने वाला बालक

प्रेरक–प्रसंग : किशोर डैनियल

हालैण्ड देश का कुछ भाग समुद्र की सतह से नीचा है इस कारण कभी–कभी समुद्र का जल आकर उस भाग में बसे गाँवों को डुबो देता था। इससे बचने के लिए वहाँ के निवासियों ने समुद्र के किनारे एक ऊँचा बाँध बना रखा था। फिर भी कभी–कभी जल का प्रवाह इतना तेज होता कि वह बांध को तोड़ देता।

एक दिन सर्दियों के मौसम में एक लड़का उस बाँध के पास से होकर जा रहा था। उसने देखा कि बांध में से धीरे–धीरे पानी निकल रहा है। पहले तो उसने सोचा कि दौड़कर गाँववालों को बता दूँ पर फिर उसने सोचा कि गाँववालों के आने तक छेद बड़ा हो जायेगा और पानी को रोकना मुश्किल होगा। पानी नहीं रूका तो सबकुछ नष्ट हो जायेगा। मुझे तुरन्त ही कुछ करना होगा।

इसके बाद उसने जो कपड़े पहने हुए थे उनको उतारा और उन्हें इकट्ठा करके छेद के मुहाने पर लगा दिया और अपने हाथों से दबा दिया। सारी रात उसने इसी प्रकार पानी को रोके रखा। एक तो सर्द रात थी, दूसरे वह ठण्डी जगह पर खुले आसमान में बैठा था और शरीर पर कोई कपड़ा भी नहीं था। इस कारण उसे सर्दी भी बहुत लग रही थी। पर वह इन सबकी परवाह न करते हुए वह पानी को रोके वहाँ बैठा रहा।

सवेरे किसी व्यक्ति ने उसे बाँध के पास बैठे और बाँध के छेद में हाथ डाले देखा तो पूछा कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तो लड़के ने लड़खड़ाती आवाज में कहा कि 'यहाँ से पानी निकल रहा है, इसको मैंने रोक रखा है, नहीं तो गाँव डूब जायेगा।' इससे अधिक वह बोल न पाया क्योंकि एक तो वह रातभर का भूखा–प्यासा और थका हुआ था दूसरे ठण्ड के कारण वह बेसुध–सा हो गया था। इसके बाद उस आदमी ने उसका हाथ हटाकर अपने हाथ को बांध के छेद में डाल दिया और सहायता के लिए पुकार मचाई। थोड़ी ही देर में लोग वहाँ आ गये और उन्होंने पानी निकलने की जगह को अच्छी तरह से बन्द कर दिया।

लड़के को लोगों ने बहुत आदर–सम्मान दिया क्योंकि उसने स्वयं को खतरे में डालकर गाँव को डूबने से बचाया था।

समाचार

बिना दुम वाला पहला धूमकेतु मिला

खगोलविदो को अपनी तरह का पहला बिना दुम वाला ऐसा धूमकेतु मिला है जिससे सौरमंडल के बनने और उसके विकास के रहस्य से पर्दा उठ सकता है।

यह शोध 'साइंस एडवांसिस' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। 'मैन्क्स' धूमकेतु का नाम बिना पूंछ वाली बिल्लियों की एक नस्ल पर रखा गया है। यह धूमकेतु चट्टानों जैसी सामग्री से बना है जो आमतौर पर धरती के करीब पाई जाती है। ज्यादातर धूमकेतु बर्फ और अन्य जमे हुए पदार्थों से बने होते हैं और सौरमंडल से दूर जमी हुई अवस्था में बनते हैं।

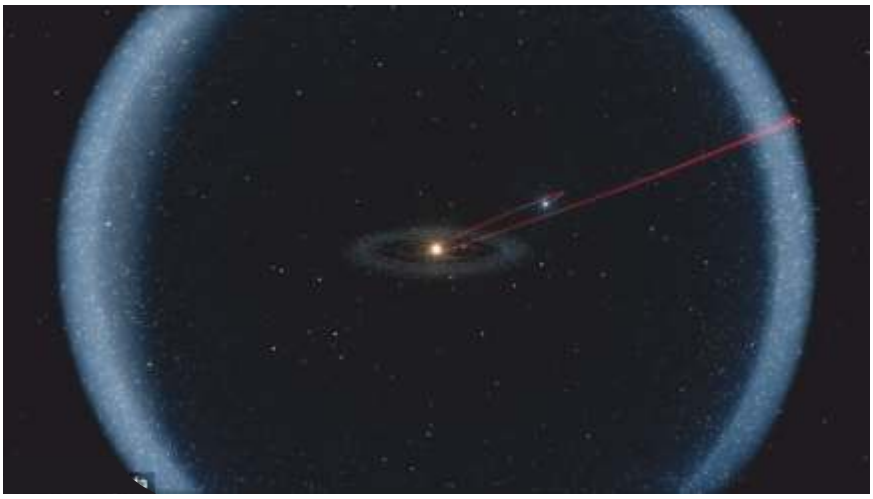

शोधकर्ताओं का मानना है कि यह नया धूमकेतु पृथ्वी की तरह इसी क्षेत्र में बना होगा और फिर जैसे गुरुत्वाकर्षण बल के कारण सितारों को धकेला जाता है वैसे ही इसे भी सौरमंडल के पिछले हिस्से में धकेला गया होगा। वैज्ञानिक अब यह पता लगाने की कोशिश में लगे हैं कि कितने और धूमकेतु मौजूद हैं। इससे यह पता चल सकता है कि कैसे और कब सौरमंडल अपनी मौजूदा आकृति में बना।

जर्मनी में यूरोपियन साउदर्न आब्जर्वेटरी के साथ काम करने वाले खगोलविद एवं इस शोध से जुड़े ओलिवर हैनॉट ने कहा कि इस धूमकेतु की मदद से हम यह पता लगाएंगे कि बड़े सितारे जब छोटे थे तो कैसे वे सौरमंडल में घूमते थे या फिर क्या वे बिना ज्यादा घूमे बढ़े। सामान्यतः इस क्षेत्र के धूमकेतु चमकीली दुम वाले होते हैं और सूर्य के करीब होने के कारण पिघलते हैं लेकिन पृथ्वी की तरह सूर्य से दूर 'मैन्क्स' काला और बिना दुम वाला है। धूमकेतु पर आमतौर पर बर्फ पाई जाती है लेकिन 'मैन्क्स' धूमकेतु पर चट्टान जैसी सामग्री है जो मंगल और बृहस्पति ग्रह के क्षेत्र में पाई जाती है। मुख्य शोधकर्ता एवं यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई के खगोलविद कारेन मीच ने कहा कि 'मैन्क्स' काफी पुराना लगता है जिससे संकेत मिलता है कि यह सौरमंडल की गहराई में काफी लंबे समय से जमा हुआ है। (रायटर)

संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

किसी शहर में एक लड़का रहता था। नाम था उसका विनय। लोगों को परेशान करना, रास्ते चलते हुए जानवरों को पत्थर मारना, न जाने इस तरह की कितनी ही बुरी आदतें थी उसमें।

गर्मी की छुट्टियां होने पर, विनय के मम्मी पापा ने उसे नाना जी के पास गाँव भेज दिया।

वहाँ जाते ही विनय ने अपनी शैतानियां करनी शुरू कर दी। रोज लोग शिकायतें लेकर नाना जी के पास पहुँच जाते।
नाना जी, विनय को अपने पास बुलाकर प्यार से समझाते। वह कान पकड़ कर माफी भी मांगता लेकिन थोड़ी देर बाद ही सब कुछ भूल कर शैतानियां करने लगता।
परेशान नाना जी एक दिन उसे अपने बगीचे में ले गये। वहाँ जाकर उन्होंने विनय से एक पौधा उखाड़ने के लिए कहा।

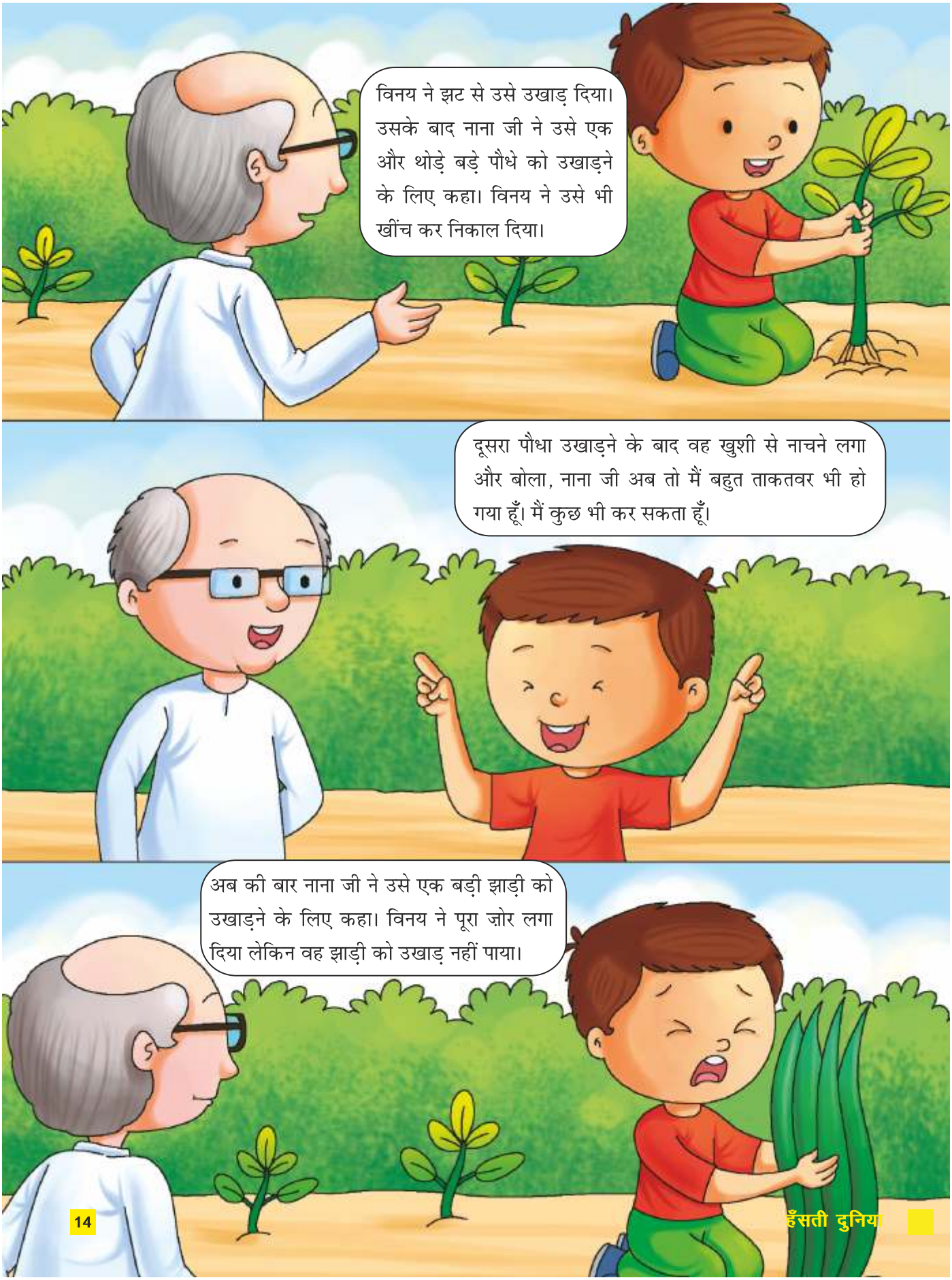
विनय ने झट से उसे उखाड़ दिया। उसके बाद नाना जी ने उसे एक और थोड़े बड़े पौधे को उखाड़ने के लिए कहा। विनय ने उसे भी खींच कर निकाल दिया।
दूसरा पौधा उखाड़ने के बाद वह खुशी से नाचने लगा और बोला, नाना जी अब तो मैं बहुत ताकतवर भी हो गया हूँ। मैं कुछ भी कर सकता हूँ।
अब की बार नाना जी ने उसे एक बड़ी झाड़ी को उखाड़ने के लिए कहा। विनय ने पूरा ज़ोर लगा दिया लेकिन वह झाड़ी को उखाड़ नहीं पाया।

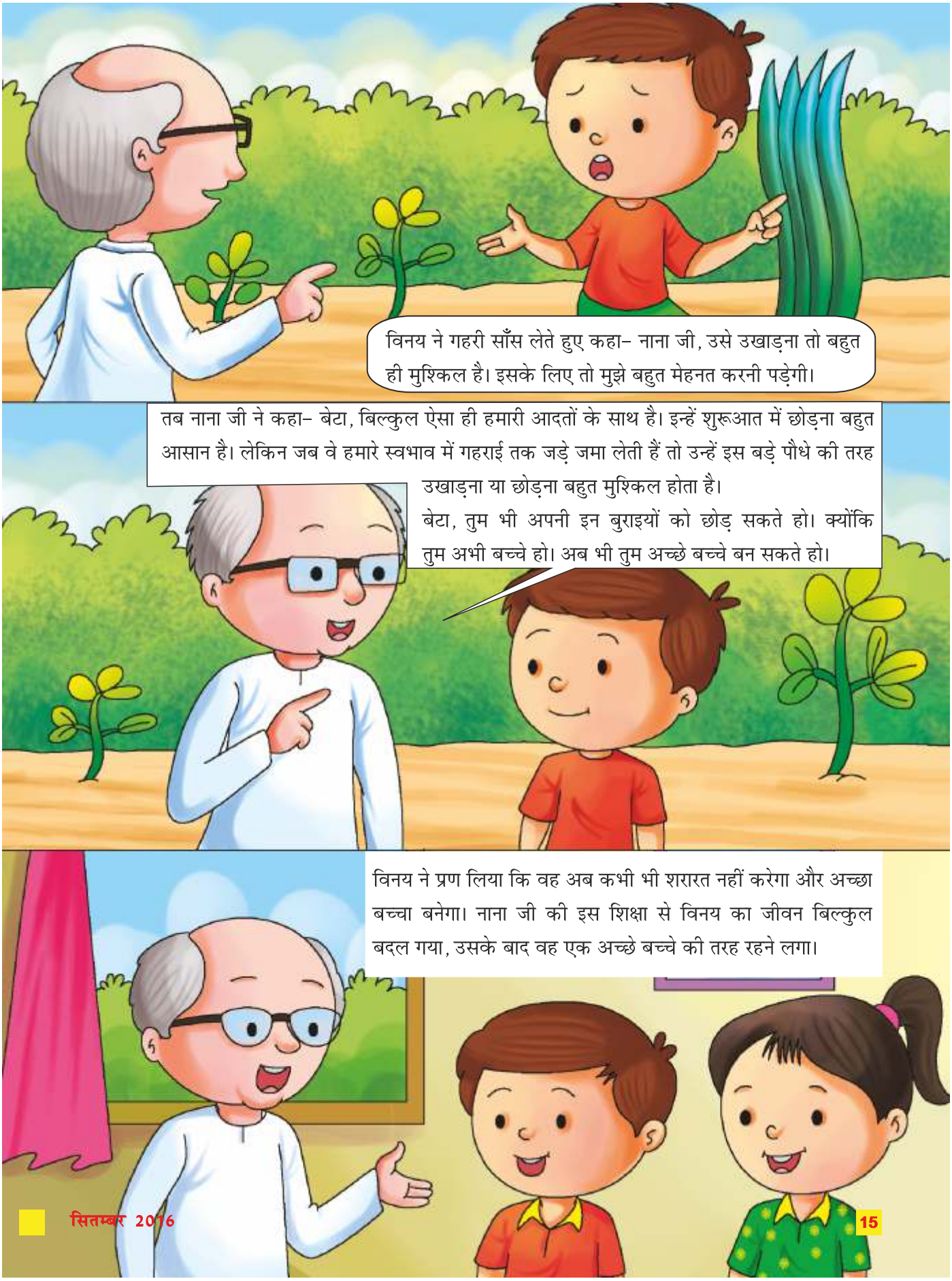
विनय ने गहरी साँस लेते हुए कहा– नाना जी, उसे उखाड़ना तो बहुत ही मुश्किल है। इसके लिए तो मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ेगी।
तब नाना जी ने कहा– बेटा, बिल्कुल ऐसा ही हमारी आदतों के साथ है। इन्हें शुरूआत में छोड़ना बहुत आसान है। लेकिन जब वे हमारे स्वभाव में गहराई तक जड़े जमा लेती हैं तो उन्हें इस बड़े पौधे की तरह उखाड़ना या छोड़ना बहुत मुश्किल होता है।
बेटा, तुम भी अपनी इन बुराइयों को छोड़ सकते हो। क्योंकि तुम अभी बच्चे हो। अब भी तुम अच्छे बच्चे बन सकते हो।
विनय ने प्रण लिया कि वह अब कभी भी शरारत नहीं करेगा और अच्छा बच्चा बनेगा। नाना जी की इस शिक्षा से विनय का जीवन बिल्कुल बदल गया, उसके बाद वह एक अच्छे बच्चे की तरह रहने लगा।

मूर्ख कौन है?

बालकथा : गोपाल जी गुप्त

धारा नरेश राजा भोज अत्यन्त न्यायप्रिय और विद्वानों का आदर करने वाले राजा थे। उनके दरबार में कवि कालिदास भी थे! रानी भी विदूषी, पतिपरायणा तथा अक्सर राजा को अमूल्य परामर्श दे चमत्कृत करने में प्रख्यात थी।

एक दिन नरेश जब रानी के कक्ष में गये तब वह अपनी प्रिय सखी से बातें कर रही थी, नरेश के अचानक पहुँचने से तथा रानी को टोक देने से बातचीत का क्रम टूट गया।

इस पर रानी ने राजा भोज से कहा, ''कहिये मूर्खराज, क्या कहना चाहते हैं?' अपने लिये अकस्मात् मूर्खराज सम्बोधन सुन राजा आवाक् रह गये और बिना कुछ कहे राजसभा में चले गये। वह समझ नहीं पा रहे थे कि रानी ने उन्हें मूर्खराज क्यों कहा? उनका मन कारण जानने को उतावला हो गया।

राजा के सिंहासनासीन होने के बाद एक–एक कर आमात्य, मंत्री, सभासद आने लगे और राजा प्रत्येक आगंतुक को, 'आइये मूर्खराज' कह उनका अभिवादन स्वीकार रहे थे। आंगतुक इस सम्बोधन को सुन चौक पड़ते परन्तु बिना कुछ बोले अपने नियत स्थान पर बैठ जाते। तभी कालिदास आये और राजा ने उनके अभिवादन के उत्तर में भी यही कहा, 'आइये मूर्खराज'! कालिदास बिना चौंके वहीं ठिठक गये और उन्होंने तुरंत ही एक श्लोक पढ़ा –

गतं न सोचामि कृतं न मनने,
खाद्यं न गच्छामि हँसे न जलये।
द्वाभ्यांतृतियो न भवामि राजन,
किं कारणं भोज भवामि मूर्खः।।

जिसका अर्थ है, हे राजन! जो कुछ बीत जाता है, उसे मन में रखकर मैं चिन्तित नहीं होता (बीती ताहि बिसार दे), कोई कार्य करने के पूर्व उसके गुण–अवगुण परिणाम आदि पर पूरी तरह मनन–चिन्तन–विचार कर लेता हूँ, चलते हुए कुछ खाता नहीं हूँ तथा हँसते हुए कभी जल नहीं ग्रहण करता। जहाँ दो व्यक्ति बात कर रहे होते हैं, वहाँ न तो बिना उनकी अनुमति प्राप्त किये प्रवेश करता हूँ; न बिना उनके द्वारा पूछने के पहले उनकी बात में दखल देता हूँ। अतः इन पाँच लक्षणों में कौन–सा लक्षण आपने मुझमें देखा है कि जो आप मुझे मूर्खराज कह रहे हैं, कृपया स्पष्ट करें।

राजा ने कुछ उत्तर नहीं दिया केवल मुस्कुराकर रह गये, उन्हें रानी के द्वारा उनके मूर्खराज कहने का कारण समझ में आ गया था। कालिदास ने राजा को मुस्कुराते देख भाँप लिया था कि सम्भवतः राजा से ही कुछ ऐसा हो गया है जो राजा को उद्विग्न किये था। इसलिए वह भी जाकर अपने नियत स्थान पर बैठ गये।

अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस
(24 सितम्बर) पर विशेष
कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

बेटी

देखो मम्मी नन्ही बिटिया,
तुमको आज बताती।
जब तुम रोतीं, रात–रात भर,
मुझको नींद न आती।।

दोष तुम्हीं को सब देते हैं,
भीतर बाहर वाले।
दोषी से हमदर्दी सबको,
कैसे खेल निराले।।

घबराती हो ताने सुनकर,
फिर भी तुम चुप रहतीं।
मर जाती पैदा होते ही,
कभी–कभी तुम कहतीं।।

हिम्मत करो और फिर देखो,
एक बात बतलाऊँ।
बेटी नहीं किसी से कम है,
तुमको मैं समझाऊँ।।

माँ मेरी मुझको अवसर दो,
जग में कुछ करने का।
मेरे सर पर हाथ धरो तुम,
गया समय डरने का।।

पढ़ लिख कर मैं बनूँ डॉक्टर,
सबकी जान बचाऊँ।
बनूँ इन्दिरा मैं भारत की,
सत्ता पर छा जाऊँ।।

अगर कहो तो बन व्यापारी,
लाखों–लाख कमाऊँ।
बेटा कभी नहीं कर सकता,
वह कर के दिखलाऊँ।।

इस बेटी को समझो मम्मी,
आज कसम यह खाती।
साथ बुढ़ापे तक दूँगी मैं,
यह विश्वास दिलाती।।

आलेख : दिनेश दर्पण

हेलीकॉप्टर की कहानी

एक स्थान से दूसरे स्थान की लम्बी दूरी को कम से कम समय में पूरी करने के उद्देश्य से हवाई जहाज का आविष्कार किया गया, पर हवाई जहाज तो सिर्फ वहीं उतर सकता है, जहाँ हवाई अड्डा और हवाई पट्टी हो। क्या ऐसे हवाई जहाज का आविष्कार किया जा सकता है? जो बिना हवाई अड्डे और बिना हवाई पट्टी के भी उड़ सके और उतर सके।

इसी आवश्यकता ने हवाई जहाजों के डिजाइन तैयार करने वाले विशेषज्ञों को हेलीकॉप्टर बनाने के लिए प्रेरित किया। रूसी डिजाइनर इगोर सिकोरस्की ने सन् 1909 में एक हेलीकॉप्टर बनाया, लेकिन इसमें यात्रियों के बैठने की जगह नहीं थी। निरन्तर खोज एवं सुधार के परिणामस्वरूप आखिर सन् 1940 में उसे सफलता मिली।

आओ, हम भी जानें कि हेलीकॉप्टर कैसे उड़ता है। आगे की ओर गोलाई लिये हुए चौकोर तथा पीछे की ओर क्रमशः पतले आकार के हेलीकॉप्टर की बॉडी (ढाँचा) स्टील की चादर की बनी होती है। इसके दो मुख्य भाग होते हैं पहला धड़ और दूसरा पूँछ। धड़ के ऊपर एक बड़ा और पूँछ पर एक छोटा पंखा लगा होता है। बड़ा पंखा जब चलता है तो उससे एक विपरीत क्रिया होती है। इस विपरीत क्रिया को संतुलित करने के लिए ही

पूँछ वाला छोटा पंखा लगाया जाता है। पूँछ वाला पंखा काफी छोटा होता है। धड़ वाला पंखा आकार में बड़ा और काफी मजबूत होता है। धड़ के पंखे की गति ही हेलीकॉप्टर को उड़ाती है। पंखे के डैने एक मजबूत छड़ से जुड़े होते है। इन डैनों को ही रोटर ब्लेड कहते हैं। जब यह छड़ घूमती है तो डैने भी घूमने लगते हैं। इन डैनों के ठीक नीचे स्वेश प्लेट लगी रहती है। स्वेश प्लेट दो गोल समतल प्लेटों की बनी होती है। जिनके बीच में लोहे की गोलियां भी होती हैं। स्वेश प्लेट एक छोटी–सी छड़ तथा डैनों दोनों से जुड़ी रहती है। पायलट (चालक) द्वारा स्वेश प्लेट को मनचाही दिशा में घुमाने या झुकाने से पंखे भी उसी दिशा और कोण पर झुकते हैं।

स्वेश प्लेट के नीचे मुख्य गियरबॉक्स होता है। गियरबॉक्स का काम पंखे की गति को नियोजित करना है। इसके नीचे गैस टरबाइन इंजन होता है। यह इंजन सामान्य टरबाइन इंजनों की तरह ही होता है।

इस इंजन के संचालन का बटन पायलट (चालक) के पास रहता है। दरअसल अब तक के बताये गये अधिकांश उपकरण हेलीकॉप्टर के धड़ की छत पर लगे रहते हैं। इन सबके संचालन बटन चालक की सीट के पास ही लगे होते हैं, दोनों सीट सबसे आगे की ओर होती हैं। धड़ के आगे का हिस्सा पारदर्शी कांच का बना होता है जिससे चालक को देखने में सुविधा रहे और वह स्पष्ट तौर पर देख सके। हेलीकॉप्टर के निचले हिस्से में हेलीकॉप्टरों को उतारने (लैंड कराने) के लिये पहिये लगे होते हैं, कुछ हेलीकॉप्टरों में पहिये की जगह स्टैण्ड होता है। जिसे संतुलित करके चालक हेलीकॉप्टर को निर्धारित या मनचाही जगह पर सुरक्षित रूप से उतार सकता है।

जब हेलीकॉप्टर को उड़ाना हो तो चालक इंजन को चालू कर देता है। इंजन के चालू होते ही धड़ के ऊपर लगा बड़ा पंखा भी घूमने लगता है। जब बड़ा पंखा बहुत तेज गति से चलने लगता है। बड़े पंखे के तेजी से चलने से उसके ऊपर हवा का एक वृत्त बनता है। जिससे उत्पन्न वायुवृत्त की सहायता से धीरे–धीरे हेलीकॉप्टर हवा में उठने लगता है और फिर उड़ जाता है अपनी मंजिल की ओर।

● ● ●

यह भी जानिए ...

संग्रहकर्ता : विभा वर्मा (वाराणसी)

★ कोई भी शताब्दी सोम, मंगल, गुरु या शनिवार से ही शुरू होती है।

★ सदैव एक अप्रैल को जो दिन होगा वही एक जुलाई को होगा।

★ कोई भी कैलेण्डर तीस साल बाद पुनः इस्तेमाल किया जा सकता है।

★ भूमध्य रेखा पर रात–दिन हमेशा बराबर रहते हैं।

★ सबसे हल्की धातु लिथियम है और सबसे भारी ओसमियम है।

★ साधारण चिड़िया एक दिन में अपने शरीर के लगभग आधे वजन के बराबर भोजन करती है।

★ मनुष्य की लाल रक्त कणिका का जीवनकाल 105 से 120 दिन का होता है।

★ गौरैया नामक चिड़िया का दिल 1 मिनट में लगभग 1,000 बार धड़कता है।

वर्ग पहेली

प्रस्तुति :
विकास
अरोड़ा

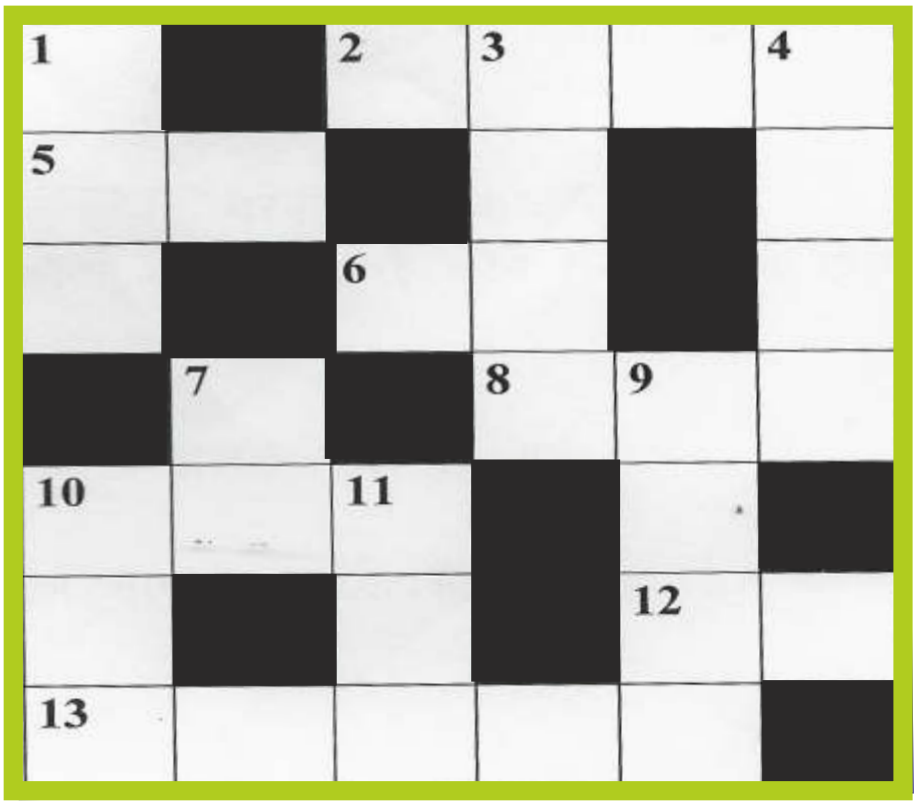

बाएं से दाएं →

2. किस मुगल सम्राट ने फतेहपुर सीकरी में बुलंद दरवाजा बनवाया?
5. इन्द्रधनुष के एक कोने पर बैंगनी रंग होता है और दूसरे कोने पर .... रंग होता है।
6. राजा दशरथ के कितने पुत्र थे?
8. अन्दर का विपरीत शब्द।
10. इस पंक्ति में छुपी एक फसल को ढूंढ़िए : झलक पास हो गई है।
12. रूस देश की राजधानी।
13. गुजरात की पहली महिला मुख्यमंत्री का नाम .... पटेल है।

ऊपर से नीचे ↓

1. ए.पी.जे. अब्दुल ....को भारत का 'मिसाईल पुरुष' कहा जाता है।
3. महात्मा गाँधी की पत्नी का नाम ..... गाँधी था।
4. इतवार का एक पर्यायवाची शब्द।
7. शुद्ध शब्द छांटिए : कृपा / क्रपा।
9. भक्त .... संजीवनी बूटी लेने गये तो पूरा पर्वत ही उठा लाए थे।
10. कट्टक और कठुआ में से जो शहर जम्मू और कश्मीर राज्य में है।
11. मक्का और मदीना .... अरब में स्थित है।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

बाल कहानी : किशन लाल शर्मा

संगठन में शक्ति है

खेल खत्म होने पर मदारी ने बंदरिया को जमीन में गड़ी कील से बांधा फिर वह जमीन में पड़े पैसे उठाकर गिनने लगा। तभी एक आदमी उसके पास आकर खड़ा हो गया।

''क्या चाहिए?'' मदारी ने उस आदमी से पूछा।

''बंदरिया बेचोगे?'' उस आदमी ने मदारी से पूछा।

''तुम इसका क्या करोगे?'' मदारी चौंका।

''तुम्हें उससे क्या?'' वह आदमी बोला, ''तुम्हें बेचनी है तो बोलो''

''कितने रुपये दोगे?'' मदारी ने पूछा।

''तुम बताओ क्या लोगे?'' वह आदमी बोला।

कुछ देर सोचकर मदारी बोला, ''हजार रुपये''

उस आदमी ने मोल–भाव नहीं किया। हजार रुपये मदारी को दे दिये। मदारी ने बंदरिया की रस्सी उस आदमी के हाथ में दे दी। वह आदमी बंदरिया को लेकर पार्क में आ गया। दोपहर का समय था, पार्क खाली था। वहाँ पेड़ों पर बंदर उछल–कूद कर रहे थे। पार्क में आदमी के साथ बंदरिया को देखकर आश्चर्य हुआ। वह आदमी पार्क में लगी नरम घास पर बैठ गया। वह रस्सी पकड़कर बंदरिया को मदारी की तरह नचाने लगा। बंदरिया को नाचते देखकर सारे बंदर एक पेड़ पर इकट्ठे हो गये। वे सब अपने साथी को नाचते देखने लगे।

''आदमी ने हमारे साथी को क्यों पकड़ रखा है?'' एक छोटी बंदरिया ने अपनी माँ से पूछा।

''आदमी ने हमारे साथी को कैद कर रखा है।'' माँ ने जवाब दिया।

''कैद क्या होती है?'' छोटी बंदरिया ने फिर पूछा।

''पकड़कर अपने वश में कर लेना'' माँ ने अपने बच्चे को समझाया, ''जानवर को गुलाम बनाकर आदमी उसे चाहे जैसे नचा सकता है।''

''आदमी हमारे साथी को गुलाम बनाने वाला कौन होता है।'' एक नवयुवक बंदर बोला।

''आदमी के पास दिमाग है। वह जंगल के बेताज बादशाह शेर तक को गुलाम बना लेता है। फिर हमारी क्या बिसात है?'' एक बुजुर्ग बंदर बोला।

''हमारे पास भी दिमाग है'' नवयुवक बंदर बोला, हम अपने साथी को आदमी के हाथ की कठपुतली नहीं बनने देंगे।''

''फिर क्या करोगे?'' दूसरा वृद्ध बंदर बोला, ''आदमी हमसे ज्यादा शक्तिशाली है। हम उसका मुकाबला नहीं कर सकते।''

''क्यों नहीं कर सकते?'' दूसरा युवा बंदर बोला, ''हमारे पास भी दिमाग है। हम भी अपने दिमाग से काम ले सकते हैं।''

''कैसे?'' कई बंदर एक साथ बोले।

''संगठन में शक्ति है।'' पहला नवयुवक बंदर बोला।

''आदमी इस समय अकेला है। हम सब मिलकर उस पर हमला कर दे तो अपने साथी को छुड़ा सकते हैं।''

नवयुवक बंदर की बात सभी बंदरों की समझ में आ गई। सब बंदरों ने एक साथ पार्क में अकेले बैठे आदमी पर हमला कर दिया। बंदरों के अप्रत्याशित आक्रमण से आदमी घबरा गया। बंदरों ने उसे जगह–जगह काट खाया। वह अपनी जान बचाने को बंदरिया को छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

बंदरिया को आजाद करा के सभी बंदर खुशी से नाचने–कूदने लगे। नवयुवक बंदर की सलाह और सूझबूझ से उन्होंने अपने साथी को छुड़ा लिया। सभी बंदरों ने नवयुवक बंदर को अपना नेता चुन लिया।

बच्चों! इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि संगठन में शक्ति है। संगठित होकर मुश्किल काम भी आसानी से कर सकते हैं।

क्या आपको पता है?

एक ऐसा पदार्थ जो आग में भी नहीं जलता

प्रस्तुति : विभा वर्मा

बच्चों, कोई भी पदार्थ अगर तुम जलती हुई भट्टी में रखते हो तो वो तुम्हारे सामने ही देखते ही देखते जलकर भस्म हो जाता है। पर बच्चों, क्या तुम्हें पता है कि एक ऐसी चीज जो तुम आग में डालते हो तो वह राख नहीं बनती? वो है 'ऐस्बेस्टस'। ऐस्बेस्टस ऐसा पदार्थ है जो आग में डालने पर भी नहीं जलता। अतः आग बुझाने वाले दल के लोग ऐस्बेस्टस के बने कपड़े पहनकर बिना किसी शंका के आग बुझाने वाले मकानों में घुस जाते हैं। उनके कपड़े सभी ऐस्बेस्टस के ही अंशों से बने होते हैं।

ऐस्बेस्टस शब्द ग्रीक भाषा का है। जिसका अर्थ है अशमनीय। यह पदार्थ चट्टानों से प्राप्त होता है। इसकी भी खानें होती हैं, जो 'ओलिविन' नामक पदार्थ के विघटन से होता है।

वैज्ञानिक जानकारी : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

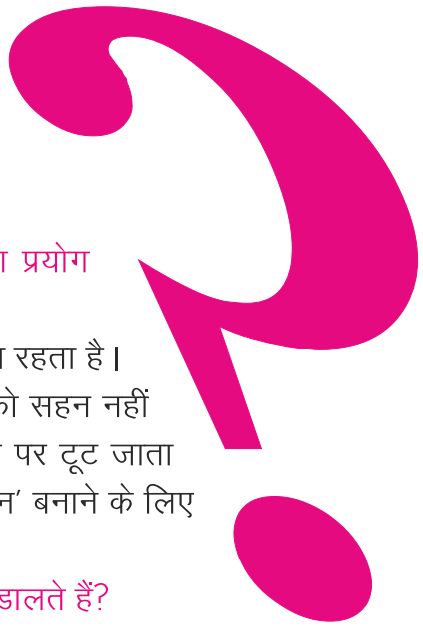

प्रश्न : वाहनों की 'विंड स्क्रीन' बनाने के लिए सेफ्टी कांच का प्रयोग क्यों किया जाता है?

उत्तर : वायु का दबाव सभी वस्तुओं एवं प्राणियों पर निरंतर पड़ता रहता है। प्रत्येक इसे सहन करने की शक्ति रखते हैं। जो दबाव को सहन नहीं कर पाते, वे टूट जाते हैं। साधारण कांच भी दबाव पड़ने पर टूट जाता है। अतः इस हानि से बचने के लिए वाहनों की 'विंड स्क्रीन' बनाने के लिए सेफ्टी कांच का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न : कुओं के पानी में पोटेशियम परमैंगनेट (लाल दवाई) क्यों डालते हैं?

उत्तर : कुएं ऊपर से खुले रहने के कारण इनके जल के प्रदूषित होने की संभावना बढ़ जाती है। अतः इनमें पोटेशियम परमैंगनेट (लाल दवाई) डालते हैं। पोटेशियम परमैंगनेट हानिकारक कीटाणुओं को मार देता है और पानी को शुद्ध व पीने योग्य बना देता है।

प्रश्न : गीली मिट्टी दबाने से क्यों दब जाती है?

उत्तर : पदार्थ ठोस, द्रव एवं गैस तीन प्रकार के होते हैं जिनमें अणुओं की व्यवस्था भी पृथक्–पृथक् होती है। ठोस पदार्थों में अणु पास–पास होते हैं, द्रवों में कुछ अधिक दूरी पर तथा गैसों में और भी ज्यादा दूरी पर। इसी प्रकार इनमें अंतराअणुक स्थान भी भिन्न–भिन्न रहता है। गीली मिट्टी द्रव पदार्थ का एक उदाहरण है जिसमें अणु थोड़ी दूरी पर स्थित होने के कारण इसके अणुओं के मध्य अंतराअणुक स्थान अधिक होता है। इसी कारण से गीली मिट्टी पर दबाव डालने से वह दब जाती है।

प्रश्न : डेजर्ट कूलर में जल का उपयोग क्यों होता है?

उत्तर : कूलर में जल एक टैंक में रखा जाता है। एक पंप तीनों ओर मैट को जल संचारित करता है। चौथी तरफ एक पंखा लगा होता है जो गर्म वायु को बाहर से अंदर खींचता है। वायु मैट में से प्रवेश करती है और जल को वाष्पित करती है। वाष्पित हो रहा जल वायु से ऊष्मा लेकर इसे ठंडा कर देता है। यही ठंडी हवा पूरे कमरे में फैलकर तुम्हें गर्मी से राहत प्रदान करती है। अतः डेजर्ट कूलर में जल का उपयोग किया जाता है।

प्रश्न : प्लास्टिक की टूटी वस्तुओं को सुरक्षित क्यों रखा जाता है?

उत्तर : प्लास्टिक मनुष्य के द्वारा बनाया हुआ वह रासायनिक पदार्थ है जिसे ताप और दाब से मनचाहा रूप और आकार प्रदान किया जा सकता है। प्लास्टिक की टूटी हुई वस्तुओं को सुरक्षित रखा जाता है क्योंकि प्लास्टिक को पिघलाकर फिर से नई वस्तुएं बनाई जा सकती हैं।

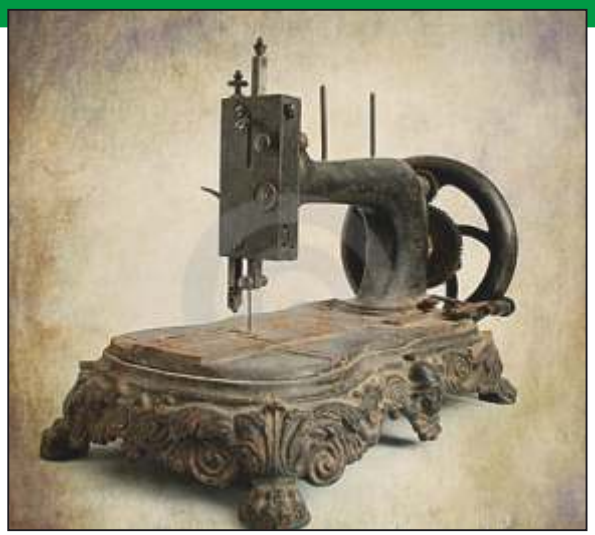

इतिहास–प्रसंग : दीपांशु जैन

दुनिया बदल देने वाला आविष्कार

एक लड़का था। उसका एक पांव नहीं था, लेकिन मां को वह बुहत प्यारा था। वह सात वर्ष का हो गया था। एक दिन उसने मां से कहा, ''मां, हमारे पड़ोस के दोनों लड़के आज स्कूल गये। तुम मुझे स्कूल कब भेजोगी?''

मां ने कहा, ''बेटा, तुम चल नहीं सकते। स्कूल दूर है। जरा और बड़े हो जाओ, तब जाना।''

वह बोला, ''नहीं मां, मैं जाऊँगा। लंगड़ा हूँ तो क्या हुआ।''

मां ने समझाया, '''नहीं बेटा, अभी नहीं।''

लेकिन बालक ने हठ पकड़ ली। झूठी हठ पकड़ने से दुख मिलता है और अच्छी हठ पकड़ने से सुख प्राप्त होता है। बालक की हठ अच्छी थी। मां समझती थी कि बालक अपंग है, इसलिए वह मेहनत का कोई काम नहीं कर सकेगा, लेकिन पढ़ लेगा, तो कोई–न–कोई काम मिल जायेगा। नहीं पढ़ेगा तो मजदूरी करनी होगी, जो अपंग होने के कारण सम्भव नहीं है। फिर तो भीख ही मांगनी पड़ेगी। सारी बातों का विचार कर मां ने उसे स्कूल में दाखिल करा दिया।

स्कूल में सहपाठी उसे लंगड़ा–लंगड़ा कहकर चिढ़ाते थे, लेकिन कुछ दिनों तक चिढ़ाने के बाद वे ही उसके मित्र बन गये। इस लंगड़े लड़के ने उन पर जादू जैसा असर किया था और वे सभी बच्चे उसके मित्र बन गये थे।

शुरू में वह बालक स्कूल जाता तो क्लास में बच्चे कभी लंगड़े लड़के का कार्टून बना देते, तो कभी उसे देख, लंगड़ाकर चलने लगते। वह इन बातों का कभी बुरा नहीं मानता था और हँसकर हर बात को टाल जाता था।

एक बार तो बच्चों ने शरारत–ही–शरारत में उसकी कुर्सी पीछे खिसका दी। जब वह बैठने लगा, तो कुर्सी न होने की वजह से गिर पड़ा। उसे चोट भी लगी और उसकी आंखों में आंसू आ गये। फिर भी वह धीरे से उठा, कुर्सी खींची और बैठ गया। लड़कों को इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसने किसी की शिकायत नहीं की। इस लंगड़े लड़के ने धीरे–धीरे अपनी सहनशीलता से सभी बच्चों पर जादू–सा कर दिया। वह अपने स्कूल में बहुत लोकप्रिय हो गया। सभी उसकी इज्जत करने लगे।

उस दिन वह घर पर बैठा स्कूल का पाठ याद कर रहा था। पास ही बैठी उसकी मां कोई कपड़ा सी रही थी।

बेटे ने मां से पूछा, ''मां, तुम दर्जी का काम सीख रही हो क्या?''

मां ने कहा, ''नहीं बेटा, तुम्हारी कमीज सी रही हूँ।''

बेटे ने पूछा, ''तुम्हें सिलाई करना आता है क्या? दर्जी को क्यों नहीं दे देती? वह अच्छी तरह से सिलाई कर देगा।''

''बेटे, दर्जी को पैसे देने पड़ेंगे। हमारे पास पैसे नहीं है।''

पैसे नहीं है। वह इतना गरीब है? बालक सोचने लगा। मां वृद्ध हो गयी है और अनेक दुःख सहनकर उसे पढ़ा रही है। उसने पढ़ना छोड़ दिया और काम की खोज में निकल पड़ा।

ढूंढते–ढूंढते वह एक मशीन बनाने के कारखाने में पहुँच गया। उसने कारखाने के मालिक से विनम्रतापूर्वक कहा, ''मैं लंगड़ा हूँ, लेकिन मुझे जो भी काम चाहें, दे दें। मेरे काम से संतोष हो तो मुझे नौकरी दें, अन्यथा नहीं।''

उसकी नम्रता से कही गयी इस बात से कारखाने का मालिक प्रभावित हुआ। उसने बालक को काम पर रख लिया। मेहनत और लगन से उस लंगड़े बालक ने अपना काम पूरा किया। मालिक को उसका काम पसंद आ गया। उसे स्थायी नौकरी मिल गयी।

मेहनत और लगन से वह काम करने लगा। उसे काम में आनंद आने लगा। काम करने में जरा–सी भी भूल न हो, इतनी लगन से वह काम करता था।

एक दिन की बात है। कारखाने का मालिक किसी से बात कर रहा था, ''हाथ से हम जितना काम करते हैं, मशीन से उसका दस गुना काम कर सकते हैं। एक दर्जी दिनभर में एक पतलून की सिलाई करता है, लेकिन सिलाई की मशीन बन जाये, तो एक दिन में दस पतलूनों की सिलाई की जा सकती है।''

उस लंगड़े युवक को अपनी मां याद हो आयी, जो वृद्धावस्था में भी हाथों से सिलाई करती है और मजदूरी से जीविका चलाती है। सिलाई मशीन का आविष्कार तब नहीं हुआ था। हाथ से ही दर्जी सिलाई करते थे।

बालक ने विनम्रता से अपने मालिक से पूछा, ''अगर आप अनुमति दें, तो मैं सिलाई मशीन बनाने की कोशिश करूँ।''

मालिक ने उसे देखा, फिर बोला, ''क्या तुम्हें विश्वास है कि ऐसी मशीन बनायी जा सकती है?''

''जी, मुझे विश्वास है कि अपनी मेहनत से मैं ऐसी मशीन बना सकूँगा,'' बालक ने दृढ़ता से कहा।

बालक ने कुछ ऐसे चित्र बनाये, जिनके आधार पर एक सिलाई मशीन बनायी जा सकती थी। उसने कारखाने के कुछ अच्छे कारीगरों की सहायता से उन चित्रों जैसे ही लोहे के मशीनी हिस्से तैयार किये और कुछ समय में ही सिलाई मशीन का एक ढांचा तैयार कर लिया। दिन–रात की मेहनत और लगन से उसे सफलता मिली और उसने एक मशीन तैयार कर ली, जिससे कपड़ों की सिलाई की जा सकती थी।

बाल कथा : ईलू रानी

बेलापुर के वैद्यजी...

बेलापुर यूं तो एक छोटा–सा गाँव था। लेकिन था बड़ा सुन्दर। एक तरफ कल–कल बहती नदी तो दूसरी तरफ हरा–भरा जंगल था। नदी के एक तरफ पहाड़ियां थीं, जो दूर से बेहद सुन्दर प्रतीत होती थीं।

गाँव में ही अमृतलाल जी नामक एक वयोवृद्ध वैद्यजी थे। जिनकी उम्र कोई 90 वर्ष के आस–पास थी। बुढ़ापे में भी चेहरे पर झुर्रियां नहीं पड़ी थी। चेहरे पर तेज व चमक थी, बाल अभी तक काले थे, तथा अपना कार्य स्वयं किया करते। बुढ़ापे में भी वे नित्य भोर में जंगल में हरे पेड़ों के इर्द–गिर्द भ्रमण पर जाया करते, व्यायाम करते और नदी में तैराकी भी किया करते। सुबह में ईश्वर सेवा के उपरान्त गाँव के लोगों का उपचार मुफ्त में करते और लोग उन्हें अपनी सेवा के बदले वे खुशी से अनाज, चीनी, चावल, घी, फल, मेवे, कपड़े आदि दिया करते थे।

एक दिन वैद्यजी बीमार पड़ गये। अब सारा गाँव हैरान हो गया। सब कहने लगे कि आप शीघ्र ठीक हो जाओ। हम सब आपके बिना मर जाएंगे।

यह सुनकर वैद्यजी ने मुस्कुराते हुए पूछा– अरे, तबीयत तो मेरी खराब है, लेकिन तुम कैसे मर जाओगे?

गाँववाले एक स्वर में बोले– भला हमारी देखभाल कौन करेगा?

इस पर वैद्यजी ने कहा– चार वैद्य और भी हैं, लेकिन आप सभी लोगों को उनकी बातें माननी होंगी।

इस पर गाँववालों ने बड़ी उत्सुकता से पूछा– कौन–सी बातें हैं?

वैद्यजी बोले– पहला वैद्य है प्रातः जल्दी उठना, दूसरा है प्रतिदिन व्यायाम करना, तीसरा है प्रतिदिन स्नान करना और चौथा वैद्य है जब भूख लगे तभी भोजन करना। इन चारों वैद्यों के कहने पर चलोगे तो सदा प्रसन्न ही रहोगे, कभी बीमार पड़ने की नौबत न आएगी... इतना कहते ही वैद्यजी स्वर्गलोक सिधार गये।

खबर सुनकर समूचा गाँव शोक में डूब गया। वैद्यजी के अन्तिम संस्कार के उपरान्त गाँव की चौपाल पर सभी गाँववालों ने एक निर्णय लिया। उसके मुताबिक वैद्यजी के बताए चारों वैद्यों का पालन सबने करना शुरू कर दिया।

फिर गाँव में कोई भी व्यक्ति बीमार न हुआ। गाँव के सभी लोग स्वस्थ रहकर जीवन व्यतीत करने लगे।

दो बाल कविताएं : रेनू भटनागर

आओ परियों

आसमान में रहने वाली,
परियों धरती पर आओ।
रंग–बिरंगे पंख पसारे,
तुम मेरा मन बहलाओ।

आँख–मिचौली, लुका–छुपी,
सब मिलकर खेलें खेल।
एक लाईन में छुक–छुक,
करते बन जाएं सब रेल।

प्यार नम्रता मिलवर्तन के,
परियों तुम गीत सुनाओ।
प्रेम भाव से रहें, गीत
में यह संदेश सुनाओ।

जाते–जाते लेकिन मेरा तुम,
एक काम कर जाओ।
खोलो मेरा बैग, आज का
होमवर्क कर जाओ।

फल

आम फलों का राजा है,
पीला मीठा ताजा है।
रस से भरा है इसका तन,
मोह लेता है सबका मन।

तरबूजे का मोटा पेट,
जैसे हो वो कोई सेठ।
खरबूजा उसका बेटा,
खेतों में वो है लेटा।

लीची के गुच्छे प्यारे,
बागों में लगते न्यारे।
ये सब हैं गरमी के फल,
जिनको खाकर मिलता बल।

अच्छे चरित्र का निर्माण करें

आलेख : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

एक कहावत है– 'धन खोया तो समझो कुछ नहीं खोया, स्वास्थ्य खोया तो समझो कुछ खोया है और यदि चरित्र खोया तो समझो सबकुछ खो दिया है।' इस कहावत में चरित्र का महत्व सहज दृष्टिगोचर होता है।

वास्तव में चरित्र ही मानव जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है। चरित्र उत्तम होना चाहिए, अच्छा होना चाहिए और सम्मानजनक होना चाहिए।

मनुष्य का आचरण–व्यवहार, कर्म आदि उसके चरित्र को अभिव्यक्त करते हैं अर्थात् मनुष्य वास्तव में जो कुछ है, वही उसका चरित्र है। अच्छे चरित्र वाले मनुष्य को हम अच्छा मनुष्य और बुरे चरित्र वाले मनुष्य को हम बुरा मनुष्य कहते हैं। चरित्र से ही मनुष्य महान बन सकता है और चरित्र से ही मनुष्य निकृष्ट बनता है, इसलिए उत्तम चरित्र ही मानव जीवन की सर्वोपरि एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

आत्म संयम, अच्छे आचरण–व्यवहार और अच्छे कर्म से ही हम अपने उत्तम चरित्र का निर्माण कर सकते हैं।

उत्तम चरित्र के बिना हमारा जीवन मृत्यु से भी बदतर हो सकता है। इसके बिना मनुष्य अधोगति को प्राप्त होता है जबकि उत्तम चरित्र से मनुष्य सब कुछ सहजतापूर्वक प्राप्त कर सकता है। उत्तम चरित्र से ही मानव का कल्याण और उद्धार हो सकता है।

शांति, सौम्यता, सरलता, शिष्टाचार, अहिंसा, संयम–मर्यादा, प्रेम, आदर्श, सदाचार, सच्चाई, ईमानदारी, श्रद्धा और नैतिकतापूर्वक जीवन व्यतीत करना ही उत्तम चरित्र की पहचान है।

चोरी–झूठ, हिंसा, क्रोध, लोभ–लालच, पाप–कपट, छल–धोखा, अहंकार, ईर्ष्या आदि से दूर रहकर हम उत्तम चरित्र का निर्माण कर सकते हैं।

दो मीठे बोल, बोलकर देखिए। कभी क्रोध मत कीजिए। किसी का बुरा मत सोचिए। सबका भला कीजिए। फिर देखिए, उत्तम चरित्र का चमत्कार।

उत्तम चरित्र के लिए जरूरी है कि हम सर्वदा सत्य के पथ पर चलें। बड़ों का आदर–सम्मान करें। संयम और अनुशासनपूर्वक जीवन व्यतीत करें।

आदर्श जीवन की पहचान है, उत्तम चरित्र। उत्तम चरित्र से ही मनुष्य उन्नति और प्रगति के मार्ग पर अग्रसित हो सकता है। उत्तम चरित्र के बल से ही मनुष्य की समस्त पीड़ाओं और समस्याओं का समाधान हो सकता है।

उत्तम चरित्र के बिना मानव जीवन व्यर्थ है। उत्तम चरित्र में ही मानव जीवन की सार्थकता है इसलिए मानव जीवन में उत्तम चरित्र की नितांत आवश्यकता होती है।

उत्तम चरित्र से मानव जीवन में सुख–शांति और समृद्धि की स्थापना होती है। दुर्दिन बदलते हैं, दुर्दशा बदलती है और जीवन–पथ के कांटे फूल बनकर खिलने लगते हैं।

जीवन में उत्तम चरित्र का महत्व कम नहीं है, जिस प्रकार जीवित रहने के लिए प्राणों की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार सार्थक जीवन के लिए उत्तम चरित्र की आवश्यकता होती है। इसलिए जीवन को सार्थक और सफल बनाने के लिए जीवन में उत्तम चरित्र का निर्माण अवश्य करना चाहिए और उत्तम चरित्र के साथ मानव जीवन व्यतीत करना चाहिए।

पहेलियां

प्रस्तुति :
जगतार 'चमन'

1. खट्टा मगर रसीला हूँ,
ऊपर से हरा या पीला हूँ।
गर्मी में मेरी आती बहार,
लगा दूँ रस की धार।।

2. मेरे नाम के दो हैं मतलब,
दोनों के है अर्थ निराले।
एक अर्थ में सब्जी हूँ मैं,
एक अर्थ में पालने वाले।।

3. मैं ऐसा गुण होता बच्चों,
जो विद्युत उपजाए।
उपस्थित आवेशों की भी,
मेरा गुण दिखलाए।।

4. पानी के तल पर क्यों सिक्का,
उठा हुआ है दिखता।
मैं हूँ घटना कौन, हाथ,
इसमें मेरा ही मिलता।।

5. शुरू कटे तो पानी कहलाऊँ,
आखिर कटे तो काज।
बीच अगर काटोगे मेरा,
बन जाऊँ मैं यमराज।।

6. एक पाँव और काली धोती,
सर्दी में हरदम है सोती।
गर्मी में छाया करती है,
मगर बारिश में है वो रोती।।

7. दो भाई है, एक रंग–रूप,
दोनों में है पटती भी खूब।
यदि एक गुम हो जाता,
दूसरा कोई काम न आता।।

8. एक विचित्र ऐसी चीज,
उजली जमीन काला बीज।
जो मनुष्य इससे करते प्यार,
वे बन जाते हैं होशियार।।

9. पेट में से निकाली,
कमर में से मारी।
क्षण भर में,
फैली है उजियारी।।

10. चार खंभो पर वह चलता है,
हरे भरे में पलता है।
बड़े पत्ते से उसके कान,
दूर से कोई भी ले पहचान।।

11. करता नकल व्यक्ति की,
मैं शाखामृग हूँ कहलाता।
पूछो अदरक का जायका अगर,
तो मैं बता नहीं पाता।।

12. लोहा खींचू ऐसी ताकत है,
पर रबड़ मुझे हराता है।
खोई सूई मैं पा लेता हूँ,
मेरा खेल निराला है।।

(पहेलियों के उत्तर
किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

लालच

कहानी : कीर्ति श्रीवास्तव

चीकू बन्दर जंगल में घूम–घूमकर ढपली बजाता और जंगल में रहने वाले सभी जानवरों का मनोरंजन करता था। ढपली बजाकर उसे जो पैसा मिलता था, उससे वह जंगल में रहने वाले गरीब जानवरों को खाना और कपड़े देकर मदद करता था। उसके इस दयालु स्वभाव से सभी जानवर उससे खुश रहते थे और उसको खूब दुआएं भी देते थे।

चीकू को ऐसा करने पर खुशी मिलती थी। जिसके कारण जंगल के सभी जानवर उसके दोस्त बन गये थे।

एक दिन चीकू अपनी ही धुन में ढपली बजाते–बजाते पास के दूसरे जंगल की ओर निकल गया। तभी चालाक भीखू सियार ने उसकी ढपली की मधुर आवाज सुनी तो उसके मन में ख्याल आया कि– 'काश मैं भी ऐसी मधुर ढपली बजा पाता।'

यही सोचकर वह चीकू के पास गया और उससे बोला– 'तुम कौन हो? कहाँ से आये हो? तुम्हारा नाम क्या है?'

'मेरा नाम चीकू है। मैं पास के जंगल में रहता हूँ। आज ढपली बजाते–बजाते आपके जंगल में आ गया।'

भीखू बोला– 'क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगे?'

चीकू बोला– 'मैं आपको जानता नहीं तो दोस्ती कैसे कर लूँ?'

'जब बात करोगे तो दोस्ती तो हो जायेगी। वैसे एक बात कहूँ तुम ढपली बहुत अच्छी बजाते हो।' – भीखू बोला।

'शुक्रिया दोस्त' चीकू ने कहा।

चीकू ने सोचा– 'यहाँ मेरा कोई दोस्त नहीं है, यदि ये दोस्त हो जाएगा तो मैं अकेला नहीं रहूँगा, मेरा भी कोई होगा जिससे मैं बातें कर सकूँगा।' वह बोला– 'ठीक है तो बताओ, आपका नाम क्या है?'

'मेरा नाम भीखू है।'

फिर चीकू और भीखू अच्छे दोस्त बन गये। एक दिन भीखू को पता चला कि चीकू ढपली बजाकर बहुत पैसे कमाता है तो भीखू को लालच आ गया और उसने सोचा– 'यदि मैं भी चीकू की तरह ढपली बजाना सीख जाऊँ तो पैसे वाला हो जाऊँगा।'

वह चीकू से बोला– 'क्या तुम मुझे ढपली बजाना सीखा दोगे?'

चीकू– 'हाँ, हाँ क्यों नहीं! तुम तो मेरे पक्के दोस्त हो तुम्हें तो मैं जरूर सिखाऊँगा।'

चीकू अब धीरे–धीरे भीखू को ढपली बजाना सिखाने लगा। जब भीखू अच्छे से ढपली बजाना सीख गया तो पैसे कमाने के लालच में आकर वह एक दिन चीकू को धोखे से अपने घर में कैद कर लिया और उसका वेश बनाकर चीकू के जंगल में चला गया।

भीखू रोज जंगल जाता और ढपली बजाता। जिससे वह बहुत पैसे कमाने लगा।

ऐसे ही दिन बीतते गये....

जंगल वालों को चीकू का व्यवहार कुछ बदला–बदला सा लगा कि जो चीकू पैसे कमाकर दूसरे जानवरों को खाना और कपड़े देता था, आज वो उनसे सीधे मुँह बात भी नहीं करता।

सुन्दर खरगोश को शक हुआ तो उसने एक दिन भीखू का पीछा किया और देखकर दंग रह गया कि चीकू तो एक कमरे में कैद है। सुन्दर खरगोश ने सोचा कि– 'यदि ये चीकू है तो वो कौन है जो हमारे जंगल में आकर ढपली बजाकर पैसे कमा रहा है।'

तभी सुन्दर खरगोश ने देखा कि चीकू के कपड़े पहने कोई और नहीं चालाक भीखू सियार है। सुन्दर तुरन्त वापस जंगल में आकर राजा शेर को सारी बात बताई। उसकी बातें सुनकर राजा ने तुरन्त सभी जानवरों की बैठक बुलवाई।

सभी जानवरों को सुन्दर ने सारी बात विस्तार से बताई। असलियत जानकर जंगल के सभी जानवर दंग रह गये और आपस में बात करने लगे– 'इतने दिनों से भीखू हमारे बीच था और हम उसे पहचान ही नहीं पाये।'

राजा ने कहा– 'हमें चीकू को बचाकर लाना होगा।'

वीरू हाथी बोला– 'कल सुबह हम सब जाकर भीखू को दो–चार हाथ लगाकर चीकू को वापस ले आयेंगे।'

'नहीं–नहीं हमें भीखू को सबक भी सिखाना चाहिए ताकि वो फिर कभी किसी ओर के साथ ऐसा न करे।' राजा ने कहा।

सभी जानवरों ने मिलकर एक योजना बनाई और अगली सुबह सभी भीखू के घर गये। पहले तो भीखू सबको देखकर घबरा गया फिर उसने सोचा– 'मैं क्यों घबराऊँ इन्हें पता थोड़े ना है कि मैं भीखू हूँ।'

सबको अपने घर पर आया देखकर वह बोला– 'मैं तो आ ही रहा था आप लोगों ने क्यों तकलीफ की।'

'चीकू आज हमने सोचा कि क्यों न आज तुम्हारे घर आकर ढपली के साथ गाने का भी मजा लिया जाये।'– राजा ने प्रेमपूर्वक कहा।

भीखू ढपली बजाने के लिए सहमत हो गया।

सभी जानवरों में जीतू मोर सबसे अच्छा गाता था और साथ ही वह सभी जानवरों की आवाजें भी निकालना जानता था।

भीखू ने ढपली बजाना शुरू किया और उसके साथ मोर ने भी गाना शुरू कर दिया। मोर गाते–गाते सियार की आवाज में गाने लगा। भीखू ढपली बजाने में इतना मग्न हुआ कि उसे ध्यान ही नहीं रहा कि जीतू मोर सियार की आवाज में गा रहा है और वो भी जीतू मोर की आवाज में आवाज मिला देता है और गाने लगता है। तभी जीतू मोर चुप हो जाता है और भीखू अकेला ही गाता रहता है थोड़ी देर बाद भीखू को ध्यान आता है कि उसकी चोरी तो पकड़ी गई। उसे राजा की योजना समझ में आ जाती है और वह राजा से माफी मांगने लगता है और उसके पैर पकडकऱ कहता है– 'मुझे माफ कर दो अब कभी ऐसा नहीं करूँगा।'

राजा उसे ऐसा फिर नहीं करने की शर्त पर माफ कर देता है और चीकू को वहाँ से लेकर जंगल में वापस आ जाता है।

चीकू सबका शुक्रिया करता है और कहता है कि– 'मुझे लग रहा था कि मेरा कोई नहीं है, पर मैं गलत था।'

'चीकू तुम्हारे विनम्र स्वभाव के कारण ही हम भीखू की असलियत जान पाये। उसने तुम्हारा रूप तो धर लिया पर वह तुम्हारे जैसा स्वभाव नहीं अपना पाया।' राजा ने चीकू की पीठ पर हाथ रखते हुए कहा।

सभी जानवरों ने भी राजा की बात में हाँ में सिर हिला दिया।

तभी खुश होकर चीकू ढपली बजाने लगा और सब झूम के नाचने लगे।

पेड़ों पर चढ़ने वाली मछली

जानकारीपूर्ण लेख
: विद्या प्रकाश

प्रकृति की रचना भी अद्भुत है। यहाँ एक से एक ऐसी अनोखी वस्तुएं देखने को मिलती हैं। अब हम मछलियों को ही लें। सर्वविदित है कि मछलियाँ जल में निवास करती हैं। ऐसे में यदि कोई यह कहे कि संसार में एक मछली ऐसी भी पायी जाती है जो पेड़ों पर चढ़ती है तो शायद किसी को विश्वास न हो। मगर यह सच है कि दुनिया में ऐसी मछलियां होती हैं जो पेड़ों पर चढ़ने में समर्थ हैं। इस प्रकार की मछलियां विश्व के अनेक भागों में पायी जाती हैं जिनमें दक्षिण भारत भी शामिल हैं। इन स्थानों के स्वच्छ जलाशयों में इस प्रकार की पेड़ पर चढ़ने वाली मछलियां मिलती हैं।

वैज्ञानिक भाषा में इस मछली का नाम एनाबास है। जलाशयों के आस–पास स्थित छोटी–छोटी झाड़ीनुमा पेड़ों पर आमतौर पर ये मछलियां चढ़ी दिखलायी पड़ती हैं। पानी के अलावा ये मछलियां गीली दलदली भूमि तथा धान के खेतों में भी चलती फिरती नजर आती हैं।

इस प्रकार की मछलियों की यह विशेषता है कि वे जलचर तथा थलचर दोनों हैं तथा पानी के साथ वे थल पर भी जीवित रह सकती हैं। वैज्ञानिकों के एक अध्ययन के अनुसार ये जल जीव खुले वातावरण में वायु में सांस लेकर भी जीवित रह सकती हैं। यह एक प्रकार से इसे प्रकृति का वरदान ही कहा जाएगा। एनाबास मछली का आकार अन्य मछलियों की तुलना में थोड़ा भिन्न होता है।

इसका रंग गहरा हरा या कुछ मटमैला सा होता है। इसका पूरा शरीर अधिकांश मछलियों की भांति शल्कों से ढका होता है। इस मछली का भोजन पानी में निवास करने वाले छोटे जीव–जन्तु होते हैं। अनेक बार यह अपने से छोटी मछलियों को भी अपना शिकार बना लेती है इस मछली की शारीरिक बनावट की एक अन्य विशेषता यह है कि इसके लम्बे पृष्ठ पंख तथा पीछे पूंछनुमा पंख पर भी कण्टक पाये जाते हैं जो शत्रुओं से इसकी रक्षा करने में सहायक होते हैं।

देखा गया है कि कुछ समय पानी में व्यतीत कर यह किनारे के झाड़ीनुमा पेड़ों पर जा चढ़ती है मानो सैर सपाटा करते हुए आराम फरमा रही हो।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

हं हं, मम्मी, आप कर लेना काम। मैं जल्दी उठकर क्या करूँगी? रोज़ तो जल्दी उठती ही हूँ।
गुड नाइट, मम्मी, मैं अब सोती हूँ। बहुत नींद आ रही है।
किट्टी, चलो जल्दी उठो सुबह हो गई
मम्मी सोने दो न, प्लीज, बहुत नींद आ रही है।

किट्टी, तुम आलसी बनकर सोती रहो। हम झील के किनारे पिकनिक मनाने जा रहे हैं।
क्या, आप झील के किनारे पिकनिक मनाने जाओगे। मैं भी चलूँगी।
नहीं, तुम अपनी नींद पूरी करना और हम मोंटू, चिंटू और मौली के साथ घुमने जाएंगे।

जल्दी-जल्दी काम खत्म कर लूं। पिकनिक पर जाने में देर हो जायेगी।
हे प्रभु! कृपा करना आज का दिन बढ़िया बीते। मौसम भी सुहावना हो, जिससे पिकनिक में मज़ा आ जाये।
पिकनिक! कौन सी पिकनिक? अरे वो! वो तो मैंने यूँ ही तुम्हें जल्दी उठाने के लिए बोला था। पर क्योंकि तुमने जल्दी उठकर सारी तैयारी की है तो हम पिकनिक पर जरूर चलेंगे।
वाह! माँ आप कितनी अच्छी हैं।

जानकारीपूर्ण लेख : गोपाल जी गुप्त

मच्छर की कहानी उसी की जुबानी

अनुष्का जब मच्छरदानी में सोने के लिए घुसी तो उसने मच्छरदानी में मच्छर की भिनभिनाहट सुनी, साथ ही हाथ पर उसका डंक चुभा। उसने दो–तीन बार के प्रयास में ही उस मच्छर को मार डाला। रात में उसने स्वप्न में एक बड़े से मच्छर को देखा जो अनुष्का से कुछ कह रहा था। उसे लगा मच्छर कह रहा हो। "तुमने मेरे परिवार के एक सदस्य को मार डाला, उस मासूम का बस इतना ही दोष था न कि वह अपने बच्चे के लिए तुम्हारा थोड़ा खून ही लेने आया था। तुमने पढ़ा होगा कि हम लोग कोलिसिडाई (coulicidae) परिवार के उड़ने वाले कीट हैं जिसे संस्कृत में मशक, अंग्रेजी में मॉस्किटों, हिन्दी में मच्छर कहते हैं।

तुमने यह भी पढ़ा होगा कि हमारा वंश बरसात के बाद इकट्ठे हुए जल, नालियों में रूके जमा पानी, कूलर की टंकियों में भरे पानी में मादा के अण्ड़ो से लार्वा तथा प्यूबा में परिवर्तन के बाद बढ़ता है। जब हम वयस्क हो जाते हैं तभी खासकर रात में और शाम को जानवरों तथा मनुष्यों के शरीर पर डंक–दंश से रक्त चूसते हैं जहाँ थोड़ी देर खुजली के बाद आराम मिल जाता है। हम किसी को अकारण नहीं काटते (हमारी नर प्रजाति तो बिलकुल नही काटती) हमारी मादाएं, जिन्हें विज्ञान में एनोफ़िलिज्स (Anophilis) कहते हैं, ही अपनी संतति के पोषण के लिए मजबूरन रक्त चूसती हैं क्योंकि उनके पेट में पल रहे अण्ड़ो के लिये प्रोटीनयुक्त रक्त ही चाहिये। इसी से वे लोगों को डंक से दंश कर रक्त ले उड़ जाती हैं।

''पर तुम्हारे काटने से लोगों को मलेरिया होता है'' अनुष्का ने कहा।

"नहीं अनुष्का यह भी एक भ्रम है क्योंकि हर मच्छर के काटने से मलेरिया नहीं होता। मलेरिया के लिये मलेरिया नामक अतिसूक्ष्म परजीवी (Paracite) जिसे प्लासमोडियम (Plasmodium) कहते हैं जिम्मेदार होता है। इस परजीवी का जीवन–चक्र मादा मच्छर तथा मनुष्यों के बीच पलता है। यह परजीवी मच्छर में अन्दर रहकर भी उसे हानि नहीं पहुँचाता पर मनुष्यों के अन्दर पहुँचकर घातक हो जाता है जो मनुष्यों में केवल उस मादा मच्छर के दंश से पहुँचता है जिसने किसी मलेरिया रोग से पीड़ित रोगी का रक्त चूसा हो। यह परजीवी मनुष्य की लाल रक्त कोशिकाओं तथा लीवर की पैटेनकाइमा कोशिकाओ में पहुँचकर अपना वंश बढ़ाता है जिससे मनुष्य को बुखार आता है और रक्तक्षय होने लगता है। जब ऐसी मादा मच्छर किसी स्वस्थ व्यक्ति को डंक मारती है तब उसके अंदर मौजूद प्लासमोडियम मादा की लार ग्रन्थि से मनुष्य के शरीर में प्रविष्ट होता है और मनुष्य इनकी वंश वृद्धि के चलते मलेरियाग्रस्त हो जाता है। यह परजीवी तब तक मनुष्य के भीतर वंश वृद्धि करता रहता है जब तक इसका उपचार शुरू नहीं हो जाता। इस तरह सभी मादा मच्छर के दंश से मलेरिया नहीं होता।"

अचानक अनुष्का की नींद खुल गयी। उसने चारों ओर नजरें घुमायी पर उसे कहीं भी अपनी कहानी सुनाने वाला मच्छर नजर नहीं आया। उसने सोचा आज उसने जो कुछ स्वप्न में मच्छर के मुँह से सुना वह स्कूल में अपनी सहेलियों को भी बतायेगी तथा उन सब से कहेगी कि वे कहीं भी पानी इकट्ठा न होने दें ताकि जहाँ तक हो सके मच्छर पैदा ही न हों।

प्रेरक प्रसंग : श्यामसुन्दर गर्ग

भारतेन्दु हरिशचन्द्र अपनी उदारता के कारण कंगाल हो गये थे। एक समय ऐसा आया कि उनके पत्रों का उत्तर देने के लिए भी पैसे नहीं थे। जो भी पत्र आता, उसका उत्तर लिखकर लिफाफे में बंद कर अपनी मेज पर रखते जाते थे। उनकी मेज पर पत्रों का ढ़ेर हो गया। यह देखकर उनके एक मित्र ने उन्हें पांच रुपये के टिकिट लाकर दिये और तब वे पत्र डाक में डाले।

भारतेन्दु की स्थिति कुछ ठीक हो गई। अब जब भी वह मित्र उनको मिलते तो वे पांच रुपये उनकी जेब में डाल देते और कहते– आपको याद नहीं, आपके पांच रुपये मुझ पर ऋण हैं।

इस पर मित्र ने कहा– 'अब मुझे तुमसे मिलना बन्द करना पड़ेगा, तुम हर बार मुझे पांच रुपये दे देते हो।'

भारतेन्दु के नेत्र भर आये। वे बोले– भाई तुमने मुझे ऐसे समय में पांच रुपये दिये थे कि मैं जीवनभर प्रतिदिन पांच रुपये दूं तो भी तुम्हारे ऋण से मुक्त नहीं हो सकता।

बाल कविता : राधे लाल 'नवचक्र'

झाड़ू का उपहार

जब अमेरिका के राष्ट्रपति,
आइजनहावर हुए निर्वाचित।
किसी ने उन्हें उपहार में,
भेजा एक झाड़ू सोच उचित।।

साथ ही लिख भेजा उन्हें,
करो याद चुनाव–वादा।
भ्रष्टाचार की गंदगी मिटानी है,
झाड़ू दिलाएगी याद सदा।।

वह झाड़ू सदैव रखा रहता,
राष्ट्रपति के कार्यालय–कक्ष में।
वह कहते, यह सर्वोत्तम उपहार,
मुझे मिला है जीत के उपलक्ष में।।

झाड़ू का यह प्यारा उपहार,
मेरे लिए है प्रेरणा–प्रद।
सदा आँखों के समक्ष रखता,
दिलाता है मुझे कर्त्तव्य की याद।।

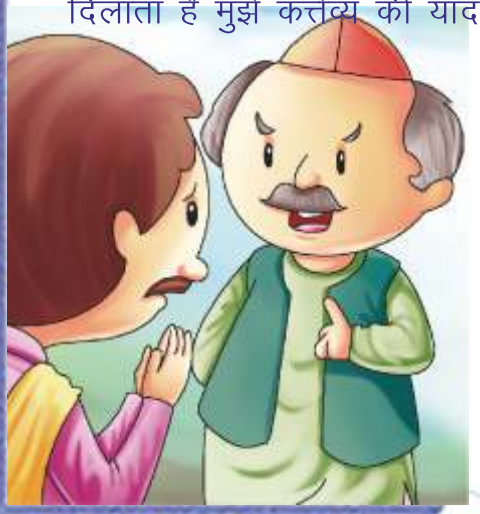

हास्य कविता : 'राधेलाल 'नवचक्र'

मालिक और नौकर

मालिक बिगड़ पड़ा नौकर पर–
"मन की मरजी नहीं करो।
अब से कुछ करने के पहले,
मुझसे जरूर पूछा करो।।"

अगले क्षण पूछा नौकर ने–
"जल्द कहिए, मैं क्या करूँ?
पी रही है दूध बिल्ली,
भगाऊँ उसे या पीने दूँ?"

जन्म दिन मुबारक

अमितेश (इन्दौर)

सुदीक्षा (गुरदासपुर)

खुशी (बिलासपुर)

रितिका (उमरिया)

अश्मिता (तलवाड़ा)

अभिनंद (यू.के.)

ऋद्धि (होशपेट)

जाह्नवी (चण्डीगढ़)

दिपेश (हिंगणघाट)

आकर्षण (बिलगा)

नंदिता (दिल्ली)

प्रेरणा (मोगा)

पारस (जम्मू)

गूंजन (तिरोड़ा)

प्रतीक (मोहाली)

मायरा (दिल्ली)

सान्वी (ठाणे)

वंदिता (फरीदाबाद)

प्रियाशा (औरंगाबाद)

लीनेश (आगरा)

ध्याना (सूरत)

प्राप्ति (काथा)

प्रितिका (वडोदरा)

हार्दिक (अवागढ़)

एकमप्रीत (चण्डीगढ़)

प्रेरित (खटिमा)

हेमांश (भवानीगढ़)

हर्षदीप (मोरिण्डा)

अनुकृति (रघवापुर)

काव्य (तपा)

अनुरूप (वर्ली)

प्राप्ति (रायपुर)

यासमीन (गंगानगर)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्पलेक्स,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

प्रस्तुति : पृथ्वीराज (घोण्डा)

क्या आप जानते हैं ?

★ कीवी न्यूजीलैंड में पाई जाने वाली एक प्रकार की चिड़िया है परन्तु वह उड़ नहीं सकती।

★ तिलचट्टा बिना सिर के नौ दिनों तक बिना कुछ खाए जीवित रह सकता है।

★ कंगारू की 50 से भी अधिक प्रजातियां हैं। कंगारू आस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं।

★ कीट अपनी आवाज के कारण शोर उत्पन्न नहीं करते हैं। मधुमक्खी, मच्छर एवं अन्य भिनभिनाने वाले कीटों का शोर उनके तेजी से फड़फड़ाते हुए पंखों के कारण होता है।

★ बिल्ली रात्रि में मनुष्यों की अपेक्षा छः गुना ज्यादा अच्छा देख सकती है। इसका कारण एक विशेष प्रकार की कोशिकाओं की पर्त (टेपीटम ल्यूसिडम) है जो प्रकाश का अवशोषण कर लेती है।

★ ताड़ का वृक्ष गर्म देशों में उगने वाला वृक्ष है। इसकी लम्बी पत्तियां ऊँचाई पर उगती हैं व इसमें शाखाएं नहीं होती हैं।

★ कनेर एक सदाबहार वृक्ष है, जिस पर सफेद, गुलाबी या बैंगनी रंग के फूल खिलते हैं। कनेर भूमध्यसागरीय देशों एवं एशिया व आस्ट्रेलिया के कुछ भागों में उगने वाला वृक्ष है।

★ यकृत आपके शरीर का सबसे बड़ा अंग है, जो रक्त को गति प्रदान करता है तथा रक्त से हानिकारक अवयवों को बाहर निकालने में सहायता करता है।

★ शिलांग को 'पूर्व का स्कॉटलैंड' कहा जाता है। यह पर्वतीय स्थल सात पहाड़ियों का समूह है। यह पर्वतीय स्थल वनस्पति और जीव–जंतुओं आकर्षक फल उद्यानों, मनोहर जलप्रपातों एवं तितलियों की विभिन्न किस्मों की बहुलता के लिए प्रसिद्ध है।

★ बृहस्पति हमारे सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रह है। बृहस्पति का धरातल ठोस नहीं है।

★ डायनासोर के अवशेष सर्वप्रथम 19वीं शताब्दी में पहचाने गए थे।

★ लक्षद्वीप लगभग 36 छोटे–बड़े द्वीपों का समूह है। लक्षद्वीप के लोग मलयालम बोलते हैं।

★ कॉकरोच शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार के होते हैं।

★ चारमीनार हैदराबाद में स्थित है इसका निर्माण सन् 1591 में हुआ था।

गाँव

बाल कविता : डॉ. दिनेश चमोला

हरे–भरे हैं खेत जहाँ पर,
ऊँचे–ऊँचे वन हैं।
सौंधी धरती महक बिखेरे,
स्वच्छ सलौने तन हैं।

ईर्ष्या, द्वेष, वैर भावना,
जिनको बस दुश्मन हैं।
मिट्टी लिपे पुते भवनों में,
सोने जैसा मन हैं।

तिलहन, अरहर, मूंग, चने से,
लद–लद खिलती दालें।
गोधूलि में स्वर्ग सलौनी,
खिल उठती चौपालें।

सेंमल, पैंयां, जै, फ्योंली हो,
हो बुरांस या सरसों।
बचपन के दिन नहीं भूलते,
बीते कितने बरसों।

सुन्दर, स्वच्छ हवा उपवन की,
पानी अमृत जैसा।
स्वर्ग सरीका गाँव मिले ना,
कितना खरचो पैसा।

नहीं प्रदूषण मन–जीवन में,
और न द्वेष ही मन में।
सभी सुखी, निर्भय हो विचरें,
अपने इस जीवन में।

सीधे–सादे लोग यहाँ के,
मन है चांदी जैसा।
जब मानव का खून एक है,
तो फिर अंतर कैसा?

अतिथि जहाँ का देवतुल्य है,
नाता अपनेपन का।
सभी कुटुंब से एक रहें हम,
ध्येय यही जीवन का

पढ़ो और हँसो

जाट : जल्दी से जूस पिला दे... लड़ाई होने वाली है।

एक गिलास पीने के बाद...

जाट : एक और पिला दे... लड़ाई होने वाली है।

जूस वाले ने 5–7 गिलास जूस और दिया और पूछा– भाई लड़ाई कब होने वाली है?

जाट : जब तू पैसे मांगेगा।

★ ★ ★

एक कंजूस अपने बच्चे को पीट रहा था।

पड़ोसी ने पूछा – क्यों पीट रहे हो?

कंजूस बोला – इसको बोला था कि एक सीढ़ी छोड़कर चढ़। चप्पल कम घिसेगी। नालायक दो सीढ़ी छोड़कर चढ़ा, पायजामा फाड़ दिया।

★ ★ ★

दो गाँववालों को दो बम मिले।

पहला आदमी– चल पुलिस को देकर आते हैं।

दूसरा आदमी– अगर कोई बम रास्ते में फट गया तो?

पहला आदमी– बोल देंगे कि एक ही मिला था।

एक कंजूस व्यक्ति मंदिर में– भगवान अगर मुझे आप 1000 रुपये देंगे तो 500 रुपये आपके श्रीचरणों में अर्पित कर दूँगा।

थोड़ी दूर जाने पर उसे 500 रुपये का नोट मिला।

व्यक्ति– प्रभु इतना भी भरोसा नहीं था जो पहले ही काट लिया।

★ ★ ★

बीवी : आज तो मैं एक रुपये के तीन प्याज ले आई।

पति : अरे वाह, वो कैसे?

बीवी : प्याज वाले ने तो एक रुपये का एक ही प्याज दिया था, एक मैं उठा के भाग आई और एक उसने मुझे फेंक मारा।

★ ★ ★

एक दोस्त : अरे यार ये मोबाइल तो मुझे एक दिन कंगाल कर देगा।

दूसरा दोस्त : क्यों?

पहला दोस्त : बार–बार दिखाता है 'बैटरी लो' अब तक 56 बैटरी बदल चुका हूँ।

★ ★ ★

पत्नी : (पति से) अजी सुनते हो, पड़ोस की लड़की को गणित में 100 में से 99 अंक मिले हैं।

पति : अच्छा, तो एक अंक कहाँ गया?

पत्नी : अपना पप्पू ले के आया है।

एक दुकानदार अपने एक ग्राहक की शादी में शामिल होने पहुँच गया। अपने ग्राहक को बधाई दी और लिफाफा देकर आया....

ग्राहक ने अगले दिन लिफाफा खोला तो लिफाफे में एक पर्ची निकली, जिसमें लिखा था–

पिछला बकाया : 1000
शगुन : 101
अब बाकी : 899

★ ★ ★

दो पागल छत पर सो रहे थे।

पहला बोला– चल अन्दर चलते हैं। पानी गिरने लगा है। लगता है आसमान में छेद हो गया है।

इतने में बिजली कड़की।

दूसरा पागल– चल सो जा। लगता है वेल्डिंग वाले भी आ गए हैं।

★ ★ ★

एक व्यक्ति को कुछ न कुछ मांगने की आदत थी। वह एक पड़ोसी के घर जाकर बोला– जरा अपना टेबलफैन देना, मेरा खराब हो गया है।

पड़ोसी बोला – जी नहीं, आज मेरी छुट्टी है, मैंने कहीं बाहर नहीं जाना, बस घर में ही पढ़ना–लिखना है।

वह व्यक्ति बोला – तो अच्छा फिर अपना स्कूटर ही दे दो, आपने तो कहीं जाना नहीं है।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

एक दोस्त दूसरे से– तुम बहुत अच्छी स्विमिंग कर लेते हो कहाँ सीखी?

दूसरा दोस्त– पानी में।

★ ★ ★

शिवांशी : भैया हमने सुना है कि विदेशों में बच्चे चौदह–पन्द्रह साल की उम्र में ही अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं, क्या यह सच है?

मयंक : अरे दीदी, विदेशों की बात छोड़ो। देख नहीं रही हो हमारे देश में बच्चे एक साल के अन्दर ही अपने पैरों पर खड़े होकर चलने लगते हैं।

★ ★ ★

बांकेलाल : डॉक्टर साहब मेरी मदद करो, मैं जब भी बात करता हूँ तो मुझे सिर्फ आवाज सुनाई देती है आदमी नहीं दिखता।

डॉक्टर : ऐसा कब होता है?

बांकेलाल : जी, फोन करते वक्त।

– दिशा बिल्दानी (बड़नेरा)

जुलाई अंक का रंग भरो परिणाम

प्रथम :

हिमांशु

आयु : 11 वर्ष
म. नं. 157, वार्ड नं. 16,
शिवाजी नगर, गुडगाँव (हरियाणा)

द्वितीय :

हार्दिक मल्होत्रा

आयु : 10 वर्ष
म. नं. ए–6/93–बी,
पश्चिम विहार, नई दिल्ली

तृतीय :

काव्या

आयु : 9 वर्ष
मोर ट्रेडिंग कम्पनी,
निकट बाल्मीकि चौक,
तपा, जिला : बरनाला (पंजाब)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

खुशी शाक्या (महावीर नगर, भरथना),
अनुपमा कोहली (जैंती), वरुण (तारकपुर),
ऐश्वर्या (रक्षक कालोनी, बेलगाँव),
वैभव किशोर (डांगौली वांगर),
अनिरूद्ध गुलेरिया (सिंहूवा),
मुस्कान सैनी (बड़ी बेगम सराय, अमरोहा),
दीक्षा कुमारी (देहरा),
साधिका नूर (चण्डीगढ़),
सुरभि (मण्डी डबवाली), भूमिका (मोहाली),
सुनिधि कश्यप (सतजोत नगर, लुधियाना),
भूमि हंस (हरदेव नगर, दिल्ली),
रितिका कुमारी (भगवतपुर),
सुदीक्षा राठौर (कवैया),
तनिष्क मंशानी (अमलीडीह, रायपुर),
पलक वर्मा (से. 52, चण्डीगढ़),
नितिन भारद्वाज (ठाडा),
सुवंशी नागवानी (इंदौर),
लविशा नन्दा (सूरतगढ़),
अंश कौशल (अगवाड़ा, ठाडा),
डौली (अमरोहा),
नवदिशा त्यागी (लोकनायकपुरम),
यशन सिंग (हुडको कालोनी, मनमाड)।

सितम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर **20 सितम्बर** तक कार्यालय **'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009** को भेज दें।

तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **नवम्बर** अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

संग्रहकर्ता :
जगतार 'चमन'

कभी न भूलो

★ विचारों की स्वतन्त्रता ही दुनिया की सबसे बड़ी आशा है। अतैव गुलामी चाहे राज्य की हो, धर्म की हो, रूढ़िवाद पालन की हो; उससे व्यक्ति और समाज को मुक्त करने का कर्तव्य ही बुद्धिजीवियों के सामने सबसे बड़ा कर्तव्य है। — डॉ. राधाकृष्णन

★ प्यार और सत्कार का मूल श्रोत ब्रह्मज्ञान है। — निर्मल जोशी

★ विद्या के साथ जीवन का आचरण करना ही विद्वता है। — सरदार पटेल

★ व्यस्त रहना जरूरी नहीं है क्योंकि व्यस्त तो चीटियां भी रहती हैं, खास बात तो यह है कि आप व्यस्त किस कार्य में है चलते रहना मायने नहीं रखता मकसद की दिशा में चलना जरूरी है। —हेनरी डेविड थोरियो

★ अगर आप अपने आपसे मित्रता कर लें, तो आप कभी अकेला महसूस नहीं करेंगे।
— मैक्सवेल माल्टज

★ जब तक तुम लोगों को भगवान और गुरु में, भक्ति तथा सच में विश्वास रहेगा, तब तक तुम्हें कोई भी नुकसान नहीं पहुँचा सकता। — स्वामी विवेकानन्द

★ कुएं में उतरने वाली बाल्टी यदि झुकती है तो भर कर बाहर आती है।

★ जो व्यक्ति अपनी गलतियों के लिए स्वयं से लड़ता है, उसे कोई भी हरा नहीं सकता। — चाणक्य

★ आपके सपने सच हो सकते हैं, अगर आपमें उन्हें पाने की कोशिश में लगे रहने का हौसला हो। — वॉल्ट डिज्नी

★ अनुभव का सबसे बड़ा शास्त्र मानव जीवन ही है।

★ बुराई का सम्पर्क हमारी अच्छी आदतों को भी दूषित कर देता है। — महाभारत

★ नैतिक बल सब प्रकार के बलों से श्रेष्ठ है।
— पास्कल

★ महान विचार जब कर्म में परिणित हो जाते हैं तो महान कार्य बन जाते हैं। — हेजलिट

★ जैसा इन्सान आपको बनना है, वैसा बनने की इच्छाशक्ति, लगन और हौसला ही सफलता की पहली सीढ़ी है।
—जॉर्ज शीहन

★ जो दूसरे नहीं देख पाएं, उसे देख पाने की कला है दूरदर्शिता। — जेनाथन स्विफ्ट

पहेलियों के उत्तर :

1. नींबू, 2. पालक, 3. घर्षण, 4. अपवर्तन, 5. काजल, 6. छतरी, 7. जूता, 8. पुस्तक, 9. माचिस, 10. हाथी, 11. बंदर, 12. चुंबक।

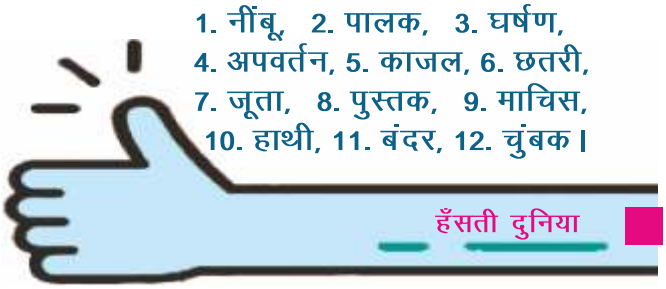

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मैं एवं मेरे परिवार के सभी सदस्य हँसती दुनिया का प्रत्येक माह बेसब्री से इन्तजार करते हैं।

जून का अंक मिला। इसमें प्रकाशित कहानियों में 'कर्मभूमि की श्रेष्ठता' एवं 'लिंकन का दृढ़ संकल्प' तथा प्रेरक–प्रसंग 'गौरव से जियो' शिक्षाप्रद लगे।

कविता 'पंछी की व्यथा' दिल को छू गई। लेख सभी ज्ञानवर्द्धक एवं शिक्षाप्रद थे। कुल मिलाकर सम्पूर्ण पत्रिका ही शिक्षाप्रद सामग्री से भरपूर है।

– प्रवीण कुमार (दरभंगा)

मैं हँसती दुनिया का पुराना सदस्य हूँ और मैं इसके आने का बेसब्री से इन्तजार करता हूँ। जुलाई अंक मिला। चित्रकथाएं 'किट्टी' और 'दादाजी' बहुत अच्छी लगीं।

इस अंक में प्रकाशित 'मित्र हो तो ऐसा' (रूपनारायण काबरा), 'जीवन मूल्य' (राजेश अरोड़ा) एवं 'सच्ची मित्रता' (सोमदत्त जोशी) आदि कहानियां शिक्षाप्रद लगीं।

– चन्द्रशेखर (डाँगोली बाँगर)

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठक हूँ। हँसती दुनिया मुझे व मेरे परिवार के सभी सदस्यों को बहुत अच्छी लगती है।

अगस्त अंक बहुत अच्छा लगा। इसमें प्रकाशित सम्पूर्ण सामग्री शिक्षाप्रद है।

कविताओं में 'आजादी हमने पाई है' और 'देश की शान' अच्छी लगीं।

– प्रियंका चोटिया (हनुमानगढ़)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 क	■	2 अ	3 क	ब	4 र
5 ला	ल	■	स्तू	■	वि
म	■	6 चा	र	■	वा
■	7 कृ	■	8 बा	9 ह	र
10 क	पा	11 स	■	नु	■
ठु	■	ऊ	■	12 मा	स्को
13 आ	नं	दी	बे	न	■

चित्र पहेली

प्रस्तुति : चाँद मोहम्मद घोसी

कौन किस साथी की पीठ पर बैठा है? एक से 100 तक के अंकों को मिलाकर उनके चित्र बनाओं फिर उनमें रंग भरो।

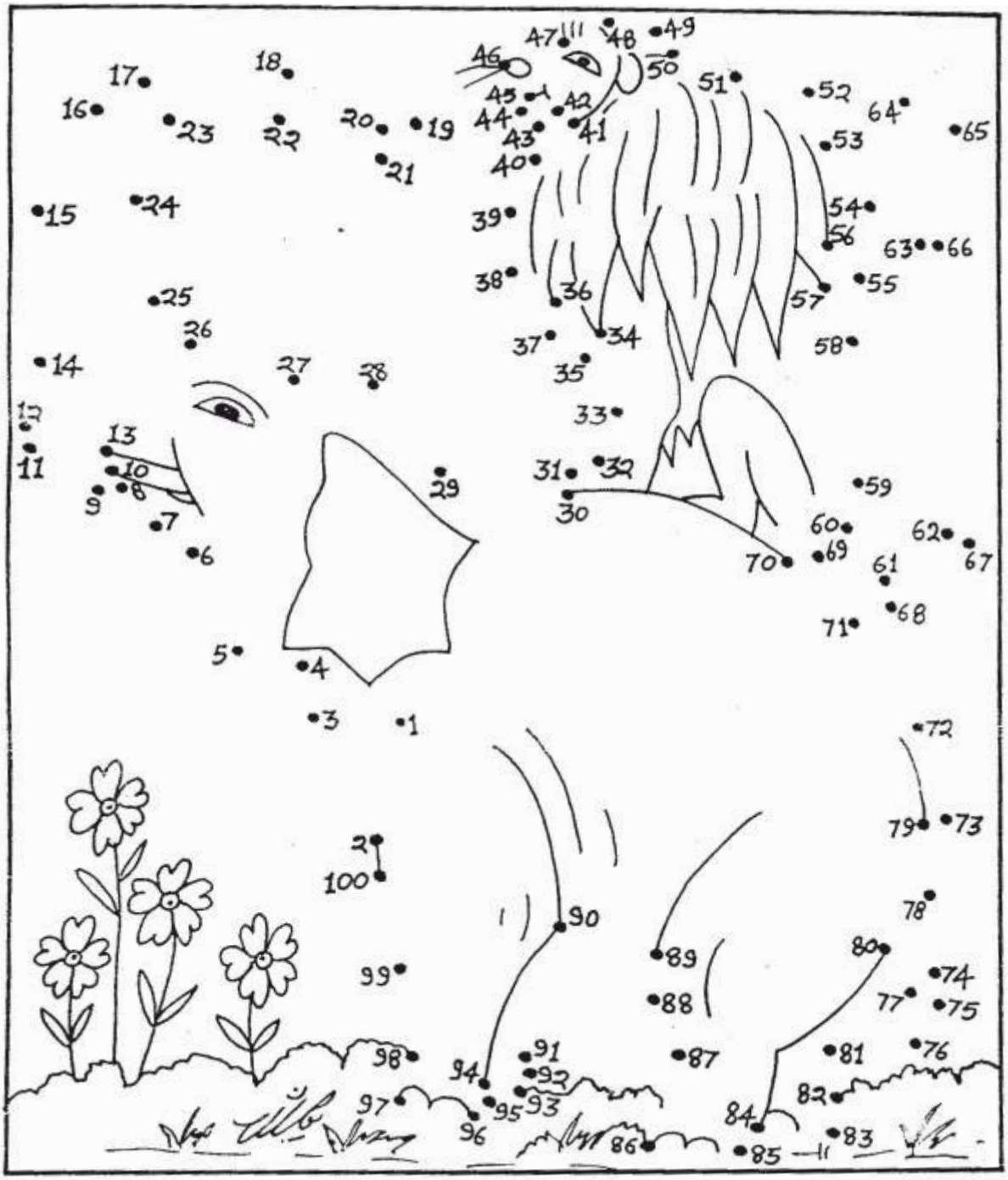

Service with Humility

SANT NIRANKARI CHARITABLE FOUNDATION

ANNOUNCES

NIRANKARI INSTITUTE OF music and arts

Courses offered Dance, Vocal and Instrumental:

- Vocal (Classical)
- Vocal (Light)
- Harmonium
- Keyboard
- Guitar
- Tabla

Affiliated to
Prayag Sangeet Samiti, Allahabad

Sant Nirankari Public School, Nirankari Colony
Email: nvc@nirankarifoundation.org
Website: www.nirankarifoundation.org

Follow us:

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Registrar of Newspaper : Licence No. U (DN)-23/2015-17
For India Under RNI No. 25672/73 : Licenced to post without Pre-payment

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share your talent in form of painting, poetry & story

Posted at IMBC/1 Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)